परिष्कृत एवं परिवर्धित
नवीन संस्करण
औषध-दर्शन
परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के
अनुभूत चामत्कारिक प्रयोगों सहित

चमत्कारी घरेलू उपचार

(स्वामी जी महाराज द्वारा योगशिविरों के दौरान बताए जाने वाले विशेष प्रयोग)

मोटापा एवं मधुमेहनाशक दलिया

गेहूँ - 500 ग्राम
चावल - 500 ग्राम
बाजरा - 500 ग्राम
साबुत मूंग - 500 ग्राम

सभी को उपरोक्त मात्रा में लेकर, भूनकर दलिया बना लें। इसमें अजवाइन 20 ग्राम तथा सफेद तिल 50 ग्राम भी मिला लें।

आवश्यकता के अनुसार लगभग 50 ग्राम दलिये को 400 मिली पानी में डालकर पकाएँ, स्वादानुसार सब्जियाँ व हल्का नमक मिला लें। नियमित रूप से 15-30 दिन तक दलिया का सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है। मोटापे से पीड़ित हृदय रोगी इस दलिया का नियमित सेवन कर निरपवादरूप से अपना वजन कम कर सकते हैं।

खीरा, करेला व टमाटर का रस मधुमेह के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

मोटापा, कब्ज, कोलेस्ट्रोल, चर्मरोग एवं कैंसर जैसे रोगों में गोमूत्र अर्क सर्वश्रेष्ठ औषध है।

हृदय रोग, अम्लपित्त, उदर रोग एवं मोटापे में लाभप्रद लौकी का रस

लौकी 500 ग्राम + पुदीना पत्र 7 नग + तुलसी पत्र 7 नग

उक्त सभी को मिलाकर रस निकालकर प्रतिदिन प्रातः काल खाली पेट पीने से हृदय की धमनियों में हुए अवरोध भी खुल जाते हैं। अम्लपित्त एवं समस्त उदररोगों का शमन करने के लिए लौकी रस का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए।

कोलेस्ट्रोल, हृदयरोग व मोटापे के लिए लौकी का रस सर्वश्रेष्ठ है।

सावधानी - कड़वी लौकी का जूस न पिएं।

अर्जुन क्षीर पाक

5-10 ग्राम अर्जुन चूर्ण में 1 कप दूध तथा 3 कप पानी मिलाकर पकाएँ। 1 कप शेष रहने पर छानकर प्रातःकाल खाली पेट पी लें। उक्त क्षीर पाक का नियमित सेवन, कमजोर हृदय वालों को अति लाभकारी होता है।

मोटापा, मधुमेह व हृदय रोग में अत्यन्त लाभप्रद अश्वगन्धा पत्र

प्रतिदिन सुबह, दोपहर एवं सायंकाल 1-1 अश्वगन्धा पत्ते को हाथ से मसलकर गोली बनाकर भोजन से 1 घण्टा पहले या खाली पेट जल के साथ लें। एक सप्ताह के नियमित सेवन के साथ ही फल, सब्जियाँ, दूध, छाछ एवं जूस पर रहते हुए कई किलो वजन कम किया जा सकता है। इस प्रयोग को लगातार 15 दिन करने के पश्चात् 10-15 दिन छोड़कर पुनः किया जा सकता है।

नोट : परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा बताए इस सामान्य से नुस्खे का प्रयोग कर लाखों लोगों ने मोटापे से छुटकारा पाकर स्वास्थ्यलाभ किया है।

मोटापा कम करने की घरेलू विधि

1 चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि में 200 मिली पानी में भिगोकर रखें। प्रातः उबालें तथा आधा शेष रहने पर छान लें। कुछ शीतल होने पर इसमें 2 चम्मच शहद मिलाकर पिएं। कुछ ही दिन के सेवन से कई किलो वजन कम हो जाता है।

मोतियाबिन्द व ग्लूकोमानाशक 'दृष्टि आई ड्रॉप'

सफेद प्याज का रस - 10 मिली
अदरक का रस - 10 मिली
नींबू का रस - 10 मिली
शहद - 50 मिली

उक्त सभी को मिलाकर एक काँच की शीशी में भरकर धूप में रखें। धूप में रखने के कुछ समय बाद तलछट नीचे बैठ जाता है तथा स्वच्छ तरल उपर रह जाता है। इस स्वच्छ तरल को साफ वस्त्र से छानकर कांच की शीशी में भरकर रख लें। नियमित रूप से 2-2 बूँद दवा आँखों में डालने से मोतियाबिन्द कट जाता है। ग्लूकोमा के रोगी का आँख का दबाव कम हो जाने से धीरे-धीरे ठीक हो जाता है।

उक्त दवा आश्रम में पतंजलि दृष्टि (आई ड्रॉप) के नाम से विशेष रूप से तैयार की जाती है, जिसके प्रयोग से अनेकों रोगी लाभ पा चुके हैं।

नेत्रज्योतिवर्धक घरेलू उपचार

100 मिली शुद्ध गुलाब जल में 10 ग्राम सूखे आँवले की साबुत कली को डुबाकर रखें। इसे 2 दिन तक रखा रहने दें। 2 दिन बाद इसे निथारकर 8 तह किए कपड़े से छान लें, इसके पश्चात् शीशी में भर कर रखें, 2-2 बूँद की मात्रा में आँखों में डालने से अश्रुस्रावाधिक्य, नेत्रलालिमा, नेत्रदाह एवं खुजली में आराम हो जाता है।

रतौंधी (Night Blindness) एवं योषापस्मार (Hysteria) में लाभकारी

सफेद प्याज का रस - 10 मिली

शहद - 10 मिली

दोनों को समान मात्रा में मिलाकर 2-2 बूँद प्रात: सायं आँखों में डालें। इससे रतौंधी तथा योषापस्मार में लाभ होता है।

कफज रोगों का घरेलू उपचार

बादाम गिरी - 100 ग्राम + खाँड - 50 ग्राम + काली मिर्च - 20 ग्राम

उपरोक्त सभी का अलग-अलग पाउडर बनाएँ। तत्पश्चात् मिलाकर सुरक्षित रख लें।

सेवन-विधि-

एक चम्मच सायं खाने के बाद गुनगुने दूध के साथ सेवन करने से जीर्ण कफ रोग, नजला-जुकाम, साइनस में विशेष लाभ होता है। यह प्रयोग कब्ज को भी दूर कर देता है तथा साइनस की वजह से होने वाले सिरदर्द में भी लाभ करता है।

विशेष-

जिनको मधुमेह हो, वे व्यक्ति खाँड का प्रयोग न करें तथा जिनको अम्लपित्त हो, वे काली मिर्च 10 ग्राम की मात्रा में ही प्रयोग करें।

थायरायड, टॉन्सिल्स व कफ रोग

त्रिकटु चूर्ण - 50 ग्राम

बहेड़ा चूर्ण - 20 ग्राम

प्रवाल पिष्टी - 10 ग्राम

सेवन-विधि-

सबको चूर्ण करके मिलाकर रख लें। वयस्क व्यक्ति एक-एक ग्राम मात्रा में चूर्ण लेकर सुबह-शाम खाली पेट मधु (शहद) या गुनगुने पानी के साथ सेवन करें। निरन्तर सेवन करने से थायरायड के रोग में विशेष लाभ होता है तथा बच्चों में टॉन्सिल्स की समस्या भी दूर हो जाती है। श्वास व कफ रोगों में भी यह प्रयोग लाभप्रद है।

नकसीर

1. पीपल के पत्रों को लेकर कूट-पीस कर रस निकाल लें। 5-5 बूँद दोनों नासिकाओं में टपका देने से शीघ्र ही नकसीर बन्द हो जाती है। 30-40 पत्रों का रस निकालकर मिश्री मिलाकर पीने से शीघ्र लाभ होता है।
2. रक्तस्राव में 5 से 10 मिली तक पीपल के पत्तों का रस प्रातः खाली पेट पीने से रक्तस्राव में शीघ्र ही लाभ होता है।
3. 2-4 बूंद दूर्वा स्वरस को नाक में डालने से शीघ्र ही नकसीर बन्द हो जाती है।

पुरानी खाँसी की अचूक दवा

मुलेठी का एक छोटा टुकड़ा, 2 काली मिर्च तथा मिश्री का एक छोटा टुकड़ा इन तीनों को मुँह में रखकर दिन में दो-तीन बार खाली पेट या खाने के बाद चूसें। इससे पुरानी से पुरानी खाँसी, गले की खराश, गला बैठना, स्वरभंग आदि में तत्काल एवं स्थायी लाभ होता है।

श्वास, कफ, साइनस, पीनस व सिर दर्द में लाभदायक रीठा जल

रीठा चूर्ण 1 ग्राम तथा 2-3 ग्राम त्रिकटु चूर्ण को 50 मिली पानी में डालकर रखें। प्रातः जल को निथार कर अलग शीशी में भरकर रखें। इस जल की 4-5 बूँद प्रातःकाल खाली पेट कुछ दिन नाक में डालने से अन्दर जमा हुआ कफ बाहर निकल जाता है। इससे नासारन्ध्र खुल जाते हैं व सिद-दर्द में भी तुरन्त लाभ पहुँचता है।

नोट : सोंठ, काली मिर्च व पिप्पली को समान मात्रा में मिलाकर बने चूर्ण को 'त्रिकटु चूर्ण' कहते हैं।

खाँसी में लाभदायक वासापत्र

वासा पत्रों का रस 1 चम्मच, अदरक का रस 1 चम्मच तथा शहद 1 चम्मच तीनों

को मिलाकर सेवन करने से सभी प्रकार की खाँसी में आराम हो जाता है।

सर्दी, जुकाम व ज्वर के लिए प्रयोग

7 पत्ते तुलसी तथा 5 लौंग लेकर एक गिलास पानी में पकाएँ। तुलसी पत्र व लौंग को पानी में डालने से पहले हल्का-सा कूटकर दरदरा कर लें। पानी पककर जब आधा शेष रह जाए, तब थोड़ा-सा सैंधव नमक डालकर गुनगुना-गुनगुना पी जाएँ। यह काढ़ा पीकर कुछ समय के लिए वस्त्र ओढ़कर पसीना ले लें। इससे ज्वर तुरन्त उतर जाता है तथा सर्दी, जुकाम व खाँसी भी ठीक हो जाती है। इस काढ़े को दिन में दो बार, दो-तीन दिन तक ले सकते हैं।

छोटे बच्चों को सर्दी, जुकाम व कफ होने पर तुलसी व अदरक का रस 5-7 बूँद शहद में मिलाकर चटाने से बच्चों का कफ, सर्दी व जुकाम ठीक हो जाता है। यह दवा नवजात शिशु को भी अल्प मात्रा में दी जा सकती है।

कफ, दमा के लिए पिप्पली-कल्प

छोटी पिप्पली 1 नग लेकर गाय के दूध में 10-15 मिनट उबालें। उबालकर पहले पिप्पली खाकर ऊपर से दूध पी लें। अगले दिन 2 पिप्पली लेकर दूध में अच्छी तरह उबालकर, पहले पिप्पली खा लें, फिर दूध पी लें। इस प्रकार 7 से 11 पिप्पली तक सेवन करके पुन: क्रमश: कम करते जाएँ अर्थात् जिस तरह एक-एक पिप्पली प्रतिदिन बढ़ाई थी, वैसे ही एक-एक पिप्पली कम करते हुए 1 नग पर वापस लौट आएँ। यदि अधिक गर्मी न लगे तो अधिकतम 15 दिन में 15 पिप्पली तक भी इस कल्प में ले सकते हैं। अधिक गर्मी लगने पर आप 7 या 11 पिप्पली पर ही रोककर पुन: क्रमश: एक पिप्पली पर लौट आएँ। यह कल्प कफ, दमा, नजला, जुकाम व पुरानी खाँसी में लाभप्रद है। इससे मन्दाग्नि, गैस, अपचन आदि रोग भी दूर हो जाते हैं।

यह पिप्पलीयुक्त दूध प्रात:काल सेवन करें। दिन में सादा आहार लें। घी, तैल एवं किसी प्रकार की भी खट्टी एवं शीतल चीजें न लें।

दमा के लिए दमबेल

दमबेल (*Tylophora indica* (Burm.f.) Merrill) का एक पत्र लेकर, उसमें एक काली मिर्च डालकर पान की तरह खाली पेट चबा लें। इस तरह तीन दिन सेवन करने से दमा से पीड़ित रोगी को लगभग पूरा आराम मिल जाता है। तीन दिन में पूरा लाभ न मिलने की स्थिति में इस प्रयोग को एक सप्ताह तक भी किया जा सकता है। तीन या

सात पत्ते खाने से दमा जैसे कठिन रोग से छुटकारा मिल सकता है। किसी-किसी रोगी को इसके सेवन से उल्टी हो सकती है। घबराने की आवश्यकता नहीं, यह स्वाभाविक-सी प्रक्रिया है। जब कफ निकल जायगा तो उल्टी अपने आप बन्द हो जाएगी। एक माह तक रोगी को घी, तैल व सभी प्रकार की खट्टी व ठण्डी चीजों से परहेज करना चाहिए।

उदरकृमि (Helminthiasis) की दवा

आड़ू के पत्तों का रस 1 चम्मच प्रातः खाली पेट नियमित सेवन करने से 4-5 दिन में ही पेट के समस्त कृमि निकल जाते हैं।

मरुआ के पत्रों का रस निकालकर 1 चम्मच रस में 1 ग्राम कबीला चूर्ण मिलाकर खाली पेट खाएं। 4-5 दिन की खुराक से ही उदर के समस्त प्रकार के कृमि निकल जाते हैं। मरुआ के पत्रों में अदरख, धनिया, हरी मिर्च तथा सैंधव नमक मिलाकर चटनी बना लें। इसका सेवन करने से अपचन, वायु, मन्दाग्नि में लाभ होता है तथा उदरकृमियों का शमन होता है।

कब्ज़ (Constipation) की घरेलू दवा

नाश्ते में एक सेव एवं सायंकाल के भोजन में एक सेब नियमित रूप से खाने से कब्ज तथा माइग्रेन का शमन होता है।

प्रातः काल 1 कप लौकी (घिया) का जूस पीने से पेट पूर्णतः साफ रहता है। साथ ही पेट के समस्त विकारों को दूर करता है एवं भविष्य में होने से रोकता है।

पपीता का यदि नियमित रूप से सेवन किया जाए तो कब्ज की स्थिति उत्पन्न ही नहीं होती।

किसी भी प्रकार की कब्ज में अमलतास का गूदा 10-20 ग्राम तक लेने से कब्ज में तुरन्त आराम हो जाता है।

आँव व संग्रहणी में लाभदायक बिल्व चूर्ण

बिल्व चूर्ण सुबह-शाम 1-1 चम्मच या बिल्व का जूस 1 गिलास पीने से आँव ठीक होता है तथा मल बँध कर आने लगता है।

कब्ज, गैस व अन्य रोग

आँवला व एलोवेरा स्वरस 4-4 चम्मच की मात्रा में मिलाकर खाली पेट गुनगुने पानी

के साथ सेवन करने से कब्ज में तुरन्त राहत मिलती है। आँवला व एलोवेरा जूस कब्ज दूर करता है और साथ-ही-साथ पूरे शरीर को शक्ति देता है यह शरीर की कोशिकाओं को क्षय से बचाकर उत्तम स्वस्थ एवं दीर्घायु प्रदान करता है।

कब्ज व अन्य उदर रोगों में उपयोगी आहार

अमरूद, पपीता, सेब, गाजर, लौकी एवं सभी हरी सब्जियाँ, मुनक्का, अंजीर आदि। कब्ज को दूर करने के लिए खाना चबा-चबाकर खाएं एवं प्रातः उठकर खाली पेट 300 मिली से लेकर 1 ली गुनगुना पानी (उष:पान) पिएं। यदि यह जल ताँबे के बर्तन में रखा हो तो और भी लाभप्रद होता है।

शुष्कार्श एवं रक्तार्श की अचूक दवाएँ

100-200 मिग्रा (1 चने की दाल जितना) देशी कपूर को केले के एक टुकड़े में रखकर खाली पेट निगल जाएँ। एक ही खुराक में रक्तस्राव बन्द हो जाता है। रक्तस्राव नहीं रुकने पर उक्त प्रयोग को तीन दिन तक दिन में तीन बार कर सकते हैं। इससे अधिक बार न करें। (इस प्रयोग के बाद केले का सेवन निषिद्ध है।)

गाय के 1 कप पीने लायक गुनगुने दूध में आधे नीबू का रस निचोड़ कर दूध फटने से पहले तुरन्त पी जाएँ। यह प्रयोग भी रक्तार्श जन्य रक्तस्राव को तुरन्त बन्द कर देता है। उक्त प्रयोग एक या दो बार से अधिक न करें। आवश्यकता होने पर चिकित्सकीय परामर्श लें।

बवासीर व अति मासिकस्राव

नारियल की दाढ़ी (भूरे रेशे) को जलाकर राख बनाकर छानकर रख लें। तीन-तीन ग्राम नारियल की यह भस्म सुबह-दोपहर खाली पेट छाछ से सायं गुनगुने जल के साथ सेवन करें। एक बार लेने से ही बवासीर में आशातीत लाभ होता है। यह मासिकधर्म में अति रक्तस्राव तथा श्वेतप्रदर में भी लाभप्रद है।

वमन (उल्टी), हैजा व हिचकी में इस भस्म को 1-1 ग्राम की मात्रा में थोड़े जल के साथ सेवन करने से विशेष लाभ होता है।

बकायन के बीजों का चूर्ण बनाकर प्रातः छाछ के साथ तथा सायं जल के साथ सेवन करने से बवासीर, रक्तस्राव व कब्ज में लाभ होता है।

नागदौन के 4-5 पत्तों को चबाकर खाने से रक्तार्श तथा अति मासिकस्राव में लाभ होता है।

श्वेतप्रदर, प्रमेह, धातु रोग एवं मासिकधर्म सम्बन्धी विकारों, अति रक्तस्राव में लाभप्रद शीशम के पत्ते

शीशम के पत्ते 8-10 व मिश्री 25 ग्राम दोनों को मिलाकर घोट-पीस कर प्रातःकाल सेवन करें। कुछ ही दिनों के सेवन से स्त्रियों के श्वेत प्रदर तथा पुरुषों के प्रमेह आदि रोगों में निश्चित लाभ होता है। मासिकधर्म के अन्तर्गत होने वाला अतिरक्तस्राव सामान्य हो जाता है।

सर्दियों के मौसम में उक्त दवा में 4-5 काली मिर्च मिलाकर सेवन करना चाहिए। यह अत्यन्त शीतल है। अत: गर्मी से होने वाले रक्तस्राव में भी अत्यन्त लाभप्रद, निरापद एवं सरल प्रयोग है।

नोट : मधुमेह के रोगी मिश्री के बिना ही प्रयोग करें।

बन्ध्यत्वनाशक योग-

शिवलिंगी बीज - 100 ग्राम

पुत्रजीवक बीज - 200 ग्राम

सर्वप्रथम पुत्रजीवक बीज से गिरी निकालकर तत्पश्चात् दोनों को मिलाकर चूर्ण बनाएँ। 1/4-1/4 चम्मच सुबह-शाम नाश्ते व खाने से पूर्व गाय के दूध से लें। कुछ ही समय के नियमित सेवन से बन्ध्यत्व में लाभ मिलता है तथा शीघ्र ही सन्तान की प्राप्ति होती है। जिन स्त्रियों को बार-बार गर्भपात होता है, उनका गर्भपात होना रुक जाता है।

सुख प्रसव (नॉर्मल डिलीवरी) के लिए अपामार्ग

अपामार्ग (*Achyranthes aspera* Linn.) की मूल (जड़) को उखाड़कर 3-3 इंच के टुकड़ों में काटकर ऊनी धागे में बाँधकर माला बना लें। प्रसव पीड़ा प्रारम्भ होने पर इस माला को स्त्री की कमर में बाँधने से 5-10 मिनट में ही सामान्य प्रसव हो जाता है। यदि प्रसव न हो तो अपामार्ग की जड़ के चूर्ण का लेप भी नाभि के चारों ओर पेडू भाग पर लगाया जा सकता है। यह शतशोनुभूत व चमत्कारी योग है जिसका प्रयोग हमने कई रोगियों पर किया है।

सावधानी :

1. प्रसव के तुरन्त बाद कमर में बंधी हुई अपामार्ग मूल की माला या लेप को हटा दें अन्यथा हानि होने की सम्भावना रहती है।
2. अपामार्ग मूल या अपामार्ग की टहनी का दातुन करने से दाँत मजबूत होते हैं तथा

पायरिया आदि दन्त रोग मिटते हैं।

3. अपामार्ग के पत्तों को पीसकर किसी भी तरह की गाँठ पर लेप करने से रोगी को विशेष लाभ होता है।

4. अपामार्ग के बीजों को चावल की तरह दूध में पकाकर खीर बनाकर खाने से भस्मक रोग ठीक होता है। जिनको बहुत अधिक भूख लगती हो, वे व्यक्ति इस खीर का सेवन करके अपनी भूख को नियन्त्रित कर सकते हैं। कई योगी पुरुष भी लम्बा उपवास करने से पहले अपामार्ग के बीजों की यह खीर खा लेते हैं। इससे उनको भूख नहीं सताती।

माताओं के लिए दुग्धवर्धक प्रयोग

शतावर चूर्ण 3 से 5 ग्राम सुबह-शाम गाय के दूध से लेने से, जिन माताओं के स्तनों में दूध सूख जाता है या कम हो जाता है, उनको पुनः यथेष्ट दूध स्तनों में उतर आता है।

शतावर चूर्ण गर्भवती माताएँ 2-3 ग्राम की मात्रा में गर्भावस्था के दौरान भी सेवन कर सकती हैं। ऐसा करने से प्रसव के बाद स्तनों में दूध की अल्पता नहीं होगी। प्रसव के बाद भी माताएँ शतावर का सेवन करती रहें। शतावर चूर्ण 50-50 ग्राम सुबह-शाम गाय-भैंसों को देने से उनके दूध में भी वृद्धि हो जाती है।

चावल + सफेद जीरा की खीर बनाकर खाने से स्तनों में दुग्ध की वृद्धि होती है।

1 चम्मच सफेद जीरा चूर्ण में समभाग मिश्री मिलाकर 1 गिलास दूध के साथ प्रातः सायं पीने से स्तनों में दुग्ध की वृद्धि होती है।

स्त्रियों के लिए अति लाभदायक 'बला'

चारों प्रकार की बला (*Sida cordifolia* Linn.) (बला, महाबला, अतिबला, नागबला) पञ्चाङ्ग चूर्ण को पीस-छानकर शहद या दूध के साथ पीने से स्त्री रोगों का शमन होता है।

कर्णशूल की दवा

सुदर्शन के पत्तों को कूट-पीस कर रस निकाल लें। गुनगुना कर 2-2 बूँद दोनों कानों में दिन में दो तीन बार डालें, पहले ही दिन से कर्णशूल में लाभ होने लगता है।

पर्णबीज के पीले पत्तों को कूटकर स्वरस निकालकर गुनगुना करके 2-2 बूँद कान में डालने से कर्णशूल का शमन होता है।

तुलसी के पत्तों का स्वरस निकालकर गुनगुना करके 2-2 बूँद कान में डालने से

कर्णशूल तथा कर्णस्राव का शमन होता है।

30-40 नीम पत्र तथा 10 लहसुन की कली को पीसकर 50 मिली कटु तैल में पकाकर, छानकर रख लें। 4-4 बूँद कान में डालने से कर्णशूल, कान से साँय-साँय की आवाज होना, कर्णस्राव व कर्णबधिरता में लाभ होता है।

दन्तविकारनाशक मंजन

हल्दी, सैंधानमक, फिटकरी का फूला, त्रिफला, नीम के पत्ते या छाल, बबूल की छाल, सभी 100-100 ग्राम तथा लौंग 20 ग्राम मिलाएं। सबका पाउडर करके सुबह एवं रात्रि सोते समय दाँतों में मंजन करें, इससे पायरिया, मुँह की बदबू, ठण्डा-गुनगुना पानी लगना इत्यादि रोग ठीक हो जाता है।

सैंधव नमक में हल्दी तथा सरसों का तेल मिलाकर दांतों पर मलने से पायरिया, दंतशूल आदि दंतरोगों तथा मुखरोगों में लाभ होता है।

नियमित रूप से तिल तैल का गरारा करने से मुख रोगों तथा दंतरोगों का शमन होता है।

बच्चों के दाँत निकलते समय मसूढ़ों में टंकण भस्म (सुहागे की खील) में शहद मिलाकर लगाने से दाँत सुगमता से निकल आते हैं।

पीलिया, हिपेटाइटिस एवं सिरोसिस ऑफ लीवर की अचूक दवा

श्योनाक की छाल - 25 ग्राम
भूमि आँवले का पंचाङ्ग - 25 ग्राम
पुनर्नवा मूल - 25 ग्राम

आवश्यकतानुसार निर्देशित मात्रा में उपरोक्त ताजी औषधियाँ लेकर एक कप रस निकालकर प्रातःकाल नियमित रूप से सेवन करने से पीलिया एवं हिपेटाइटिस में निश्चित रूप से लाभ होता है।

उक्त औषधियों के अभाव में आश्रम द्वारा बनाई गई औषधि **सर्वकल्प क्वाथ तथा टोटला क्वाथ** आदि का प्रयोग कर सकते हैं, जो कि सूखी पूनर्नवामूल, भूमि आँवला, श्योनाक आदि औषधियों के मिश्रण के साथ तैयार की गई है।

1. पुनर्नवा की जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके माला बनाकर पहनने से पीलिया में तुरन्त लाभ मिलता है।
2. लगभग 10 ग्राम पुनर्नवा की जड़ को कूटकर 1 कप पानी में मिलाकर सुबह शाम

पिलाने से पीलिया ठीक होता है तथा रोगी के खून में पित्त-रंजकों की मात्रा कम होने लगती है।

3. विडाल डोडे को रात्रि में पानी में भिगोकर रखें प्रातः इसे घिस लें तथा दो-तीन बूंद रोगी की नासिका में टपका दें या सुघांएं। ऐसा करने से रोगी को आराम मिलता है।

4. बड़ी दूधी को घिसकर पीने से पीलिया रोग शान्त हो जाता है।

कैंसर, एड्स (AIDS) व रक्ताल्पता आदि कष्टसाध्य रोगों में गेहूँ के ज्वारे का रस

सेवन-विधि :

प्रतिदिन एक-एक गमले में या थोड़ी भूमि हो तो भूमि पर नौ दिन तक गेहूँ उगाएँ। 10वें दिन प्रथम गमले में उग आई, गेहूँ की हरी पत्तियों को काट कर 10 ग्राम + 25 ग्राम गिलोय (लगभग दो फुट लम्बी व एक अंगुली जितनी मोटी) लेकर थोड़ा पानी मिलाकर पीस लें, कपड़े से निचोड़कर 1 कप की मात्रा में खाली पेट नित्य प्रयोग करें। खाली हुए गमले में अगली बार के लिए पुनः गेहूँ के दाने बो दें।

आश्रम द्वारा दी जाने वाली औषधियों के साथ उक्त रस का नियमित सेवन कैंसर जैसे भयानक रोग से शीघ्र मुक्ति प्रदान करने में सहयोग करता है।

पथरी से मुक्ति के लिए पत्थरचट्टा

नित्य प्रातः पत्थरचट्टा (*Bryophyllum pinnatum* (Lam.) Kurz.) के 2-3 पत्तों को चबा-चबा कर खाएँ। कुछ ही दिनों के सेवन से समस्त प्रकार की अश्मरी व पित्ताशय तथा मूत्र विकारों में निश्चित लाभ होता है।

पाषाणभेद (*Bergenia ligulata* (Wall.) Engl.) का चूर्ण बनाकर 1-1 चम्मच प्रातः सायं जल के साथ सेवन करने से वृक्काश्मरी में लाभ होता है।

5 ग्राम पीपल की छाल, 5 ग्राम नीम की छाल, सर्वकल्प क्वाथ 200 ग्राम तथा वृक्कदोषहर क्वाथ को मिलाकर एवं 1 चम्मच की मात्रा में लेकर 400 मिली पानी में पकाएँ। 100 मिली शेष रहने पर छानकर खाली पेट सुबह नाश्ते से पहले एवं सायंकाल खाने से 1 घण्टा पहले पिएँ।

इसके नियमित प्रयोग से कुछ ही दिनों में रक्त में यूरिया एवं क्रिएटिनीन की मात्रा घट जाती है।

मधुमेह के लिए घरेलू उपचार

खीरा, करेला और टमाटर एक-एक की संख्या में लेकर जूस निकालकर, सुबह खाली पेट पीने से मधुमेह में लाभ होता है।

जामुन की गुठली का पाउडर करके, एक-एक चम्मच सुबह-शाम खाली पेट पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह नियन्त्रित होता है।

नीम के 7 पत्ते सुबह खाली पेट चबाकर अथवा पीसकर पानी के साथ लेने से मधुमेह में लाभ मिलता है।

सदाबहार के 7 पुष्पों को खाली पेट जल के साथ चबाकर सेवन करने से भी मधुमेह में लाभ मिलता है।

गिलोय, जामुन, कुटकी, निम्बपत्र, चिरायता, कालमेघ, सूखा करेला, काली जीरी, मेथी, इनको समान मात्रा मैं लेकर चूर्ण कर लें। यह चूर्ण 1-1 चम्मच सबुह-शाम खाली पेट पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह में विशेष लाभ मिलता है।

करंजबीज चूर्ण को आधा-आधा चम्मच की मात्रा में प्रात: सायं गुनगुने जल के साथ सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है।

वातज विकारों के घरेलू उपचार

हल्दी, मेथी-दाना व सौंठ- 100-100 ग्राम तथा अश्वगन्धा चूर्ण-50 ग्राम मात्रा में लेकर चूर्ण कर लें। 1-1 चम्मच नाश्ते व शाम खाने के बाद गुनगुने पानी से लें। इसके सेवन से जोड़ों का दर्द, गठिया, कमर दर्द आदि में विशेष लाभ होता है

लहसुन की 1 से 3 कली खाली पेट पानी से लेने से जोड़ों के दर्द में लाभ होता है। साथ ही बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड सामान्य होता है। हृदय की शिराओं में आए हुए अवरोध को भी दूर करने में लहसुन उपयोगी है।

मोथा घास की जड़, जो कि एक गाँठ की तरह होती है, उसका पाउडर करके 1 से 2 ग्राम सुबह-शाम पानी या दूध से लेने से जोड़ों के दर्द व गठिया में आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

निर्गुण्डी के पत्तों का चूर्ण एक-एक चम्माच सुबह-शाम खाना खाने के बाद पानी के साथ सेवन करने से वात रोगों का शमन होता है।

एरण्ड के पत्तों को पीसकर हल्का गर्म करके जोड़ो पर लगाने से लाभ मिलता है।

गृध्रसी एवं मधुमेह में लाभदायक सदाबहार एवं हरसिंगार के पत्ते

सदाबहार के 5 पत्ते एवं फूल प्रतिदिन प्रात: खाली पेट खाने से रक्त में शर्करा की मात्रा नियंत्रित रहती है एवं सियाटिका के दर्द में आराम होता है।

हरसिंगार के 5 पत्तों का काढ़ा बनाकर प्रतिदिन प्रात: खाली पेट पीने से रक्त में शर्करा की मात्रा नियंत्रित रहती है तथा सियाटिका का दर्द दूर होता है।

मोच, शोथ एवं अस्थिभग्न के लिए घरेलू उपचार

मंजिष्ठा चूर्ण, शतधौत घृत, रक्तचन्दन, शालि चावल तथा यष्टीमधु चूर्ण को बराबर मात्रा में मिलाकर स्थानिक प्रयोग करके बन्धन बांधने से मोच, अस्थिभग्न में चामत्कारिक लाभ मिलता है।

एरण्ड या आक के पत्तों में पीड़ान्तक तैल लगाकर, हल्का गर्मकर प्रभावित स्थान पर बाँधने से शोथ, मोच तथा वेदना में लाभ होता है।

गेहूँ की मोटी रोटी बनाकर उसमें हल्दी तथा सरसों का तैल लगाकर, एक तरफ गर्मकर मोच व शोथयुक्त स्थान पर बाँधने से लाभ होता है।

सिर दर्द, अनिद्रा तथा माइग्रेन में लाभकारी नस्य

बादाम का तैल सुबह खाली पेट तथा सायंकाल सोते समय नाक में डालने से सिर दर्द, माइग्रेन, अनिद्रा, स्मृति–दौर्बल्य, सिर में भारीपन, पक्षाघात, कम्पवात, डिप्रेशन व साइनस में विशेष लाभ होता है। सिर दर्द व अनिद्रा में तुरन्त प्रभाव करता है। बादाम रोगन की सिर में मालिश करने से भी उपरोक्त सभी रोगों में शीघ्र लाभ होता है।

4–4 बूँद गाय के घी को दोनों नथुनों में डालने से अनिद्रा तथा माइग्रेन में लाभ होता है।

निर्गुण्डी के पत्रों का स्वरस निकालकर 4–4 बूँद नाक में डालने से शिर:शूल, कफज–विकारों तथा माइग्रेन में लाभ होता है।

बालों को झड़ने एवं सफेद होने से रोकने वाला प्रयोग

नियमित रूप से दोनों हाथों की अंगुलियों के नाखूनों को आपस में दिन में 2–3 बार 5-5 मिनट रगड़ें। इस प्रयोग के अभ्यास से बालों का झड़ना एवं सफेद होना रुक जाता है। बाल काले एवं घने होने लगते हैं। हमने इस प्रयोग से हजारों वंशानुगत रूप से भी गंजों के बाल उगते एवं 70 वर्ष के वृद्धों के भी बाल काले होते देखे हैं।

बालों के लिए अचूक दवा

बर्रे (पीली मक्खी) का छत्ता (जिसमें से मक्खियाँ उड़ चुकी हों) 5 ग्राम एवं देशी गुड़हल के 10–15 पत्तों को आधा लीटर नारियल तेल में डालकर मन्द-मन्द आग पर उबालें। सिकते-सिकते जब छत्ता काला पड़ जाए तो तेल को अग्नि से हटा लें। ठण्डा हो जाने पर निथार कर तैल को शीशी में भरकर रखें। प्रतिदिन हल्के हाथ से इस तैल की सिर पर मालिश करने से बाल उग आते हैं।

रूसी (Dandruff) नाशक सरल प्रयोग

200 ग्राम नीम के पत्तों को कूटकर 200 मिली तिल तैल में मिलाकर मन्द अग्नि पर धीरे-धीरे पकाएँ। पकाने के बाद छानकर रख लें। इस तैल को सिर में लगाने से डेन्ड्रफ व बालों का झड़ना आदि रोग दूर होते हैं। सिर में सोराइसिस या फोड़े-फुन्सियाँ होने पर इसे लगाने से शीघ्र ही लाभ मिलता है।

सुहागे (टंकण) का फूल	–	5 ग्राम (1 छोटा चम्मच)
नारियल का तेल	–	5 मिली (1 चम्मच)
दही	–	15 मिली (3 चम्मच)
नीबू स्वरस	–	5 मिली

उक्त तीनों को ठीक प्रकार से मिलाकर बालों में लगाएँ। लगभग 1 घण्टा बाद बालों को धो लें। साथ ही आश्रम में तैयार किए गए दिव्य केश तैल का प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होता है।

केशों को काला करने के लिए

सूखी पिसी मेंहदी	–	20 ग्राम
काफी पाउडर	–	3 ग्राम
दही	–	25 ग्राम
नींबू का रस	–	4 चम्मच
कत्था	–	3 ग्राम
ब्राम्ही चूर्ण	–	10 ग्राम
आँवला चूर्ण	–	10 ग्राम

सभी को घोटकर मिला लें (बालों में लगाकर 1/2 घण्टा छोड़ दें) पानी से धो लें। इसके प्रयोग से बाल काले, घने तथा मुलायम हो जाते हैं।

शीत-पित्त (Urticaria) की घरेलू दवा

50 मिली नारियल तेल तथा 5 ग्राम देशी कपूर दोनों को मिलाकर, शीत-पित्त पर लगाने से तुरन्त आराम मिलता है और जलन तथा खुजली शान्त हो जाती है।

5 नग काली मिर्च 4 चम्मच खाँड तथा 4 चम्मच देशी गोघृत को मिलाकर सेवन करने से शीतपित्त में लाभ होता है।

Gangrene की दवा

गाय का शुद्ध देशी घी लगाकर, विधारा के पत्रों को हल्का-सा गर्म कर साथ में बाँधने से कुछ ही दिनों में Gangrene जैसे भयानक व्रण में आराम हो जाता है।

सदाहरी के पत्तों को पीसकर, रस निकालकर लगाने से कुछ ही दिनों में Gangrene का घाव भरने लगता है।

होठों का फटना (Cracks of Lips)

नित्य प्रतिदिन स्नान के बाद, नाभि में सरसों का तेल मलने से होठों का फटना बन्द हो जाता है। साथ ही चेहरे की रूक्षता दूर होकर कान्ति बढ़ती है।

बिवाई या विपादिका (Cracks of Heal) का मलहम

सरसों का तैल - 50 मिली
देशी मोम - 25 ग्राम
देशी कपूर - 5 ग्राम

सरसों के तैल को गर्म करें। जब तैल उबलने लगे तो उसमें धीरे-धीरे मोम मिला दें। जब मोम पूरी तरह से घुलकर मिल जाए, तो बर्तन को आँच से उतार लें एवं ठण्डा होने दें। थोड़ा गुनगुना रहने पर उसमें कपूर भी मिला दें। इस तरह तैयार मलहम को रात्रि में सोने से पूर्व बिवाइयों में लगाएं। पहले ही दिन से लाभ मिलने लगता है।

श्वेतकुष्ठ, श्वित्र, चर्म रोगों में लाभकारी

गोमूत्र - 100 मिली
निम्ब पत्र - 100 ग्राम
गोबर रस - 100 मिली
बावची चूर्ण - 100 ग्राम

1. सभी को मिलाकर एवं पीसकर लेप बना लें। इस लेप को लगाने से श्वित्र एवं अन्य सभी प्रकार के चर्म-रोगों (Skin Diseases) में शीघ्र ही आराम मिलता है।
2. पुनर्नवा मूल तथा अर्जुनछाल को गोमूत्र में पीसकर लगाने से श्वेतकुष्ठ में आराम मिलता है।

तिल की दवा

दिव्य कायाकल्प वटी - 40 ग्राम

2-2 गोली सुबह शाम खाली पेट पानी से लें। दवा सेवन के 1 घण्टा पहले व बाद में दूध व दूध से बने पदार्थ न लें।

दिव्य कैशोर गुग्गुलु - 40 ग्राम

1-1 गोली सुबह-शाम खाने के बाद गुनगुने पानी से लें।

मस्सों व कॉर्न्स (गोखरू) की दवा

खाने का चूना - 10 ग्राम
सज्जीक्षार - 10 ग्राम
कपड़े धोने का सोडा - 10 ग्राम
गेरू - 2 ग्राम

थोड़ा जल मिलाकर चारों को घोंट-पीस कर मलहम बना लें। मस्सों पर एक बार माचिस की तिली या रूई की फुरेरी से लगाएँ। एक बार लगाने से मस्सा सूख जाता है। एक बार में मस्सा न सूखे तो 2-3 दिन के अन्तराल से एक-दो बार और लगा सकते हैं। इस प्रयोग को सावधानी से करें। (इस से मस्सें सूखने के बाद स्वतः ही झड़ जाते हैं।)

कॉर्न्स- कॉर्न्स (गोखरू) या पैरों की डील को तेज यन्त्र से काटकर उसमें यह दवा भर दें। ऐसे कुछ दिन करने से कॉर्न्स खत्म हो जाते हैं।

कील-मुहासों के लिए

पानी ज्यादा पिएं, नीम के पत्ते 3-3 सुबह शाम खाएं, मिर्च-मसाला एवं गर्म चीजें कम खाएं।

त्वचा रोग एवं चेहरे के दाग धब्बे व झुर्रियाँ

एलोवेरा के पत्ते को छीलकर गूदेदार भाग को मुख व त्वचा पर लगाने से त्वचा की

कान्ति बढ़ती है तथा दाग, धब्बे व झुर्रियाँ दूर होती है।

चेहरे पर निखार लाने के लिए

5 ग्राम चिरौंजी, 1 चम्मच हल्दी, 1 चम्मच शहद तथा 1 चम्मच बेसन को कच्चे दूध में मिलाकर चेहरे पर लगाएं।

1 पके टमाटर के रस में 1/2 चम्मच नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाएं।

जैतून के तेल में नींबू का रस मिलाकर पूरे शरीर की मालिश करें।

दुर्बलता के लिए अश्वगन्धा चूर्ण

अश्वगन्धा चूर्ण 1-1 चम्मच (3 से 5 ग्राम) सुबह-शाम दूध से सेवन करने से दुबले व्यक्तियों का एक माह में लगभग 3 से 5 किलो वजन बढ़ जाता है। इस चूर्ण का सेवन करने से शारीरिक दुर्बलता, वातरोग व स्नायुरोग में भी विशेष लाभ होता है।

मुँह के छालों के लिए घरेलू दवा

कायाकल्प तैल में फिटकरी भस्म मिलाकर रूई की फुहेरी से प्रभावित स्थान पर लगाने से मुख के छाले ठीक हो जाते हैं।

चमेली और अमरूद के 5-5 पत्ते लेकर थोड़ी देर तक मुँह में धीरे-धीरे चबाएँ। थोड़ी देर बाद पानी बाहर निकाल दें। ऐसा करने से भी मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं।

1 या 2 खदिरादि वटी को मुख में रख कर चूसने से छालों में लाभ होता है।

Platelets को बढ़ाने के लिए

प्रतिदिन खाली पेट 25-50 ग्राम घृतकुमारी का गूदा खाने से अथवा घृत कुमारी स्वरस को पीने से कम हुई Platelets की संख्या बढ़ जाती है।

घृतकुमारी का गूदा Platelets को बढ़ाने के साथ-साथ उदर के समस्त विकारों एवं स्त्रियों के रोगों में बहुत लाभ करता है।

वात रोग, थैलेसीमिया, हिपेटाइटिस 'बी', पेट का फूल जाना, भूख न लगना, भोजन करने पर पेट में जलन होना, स्त्रियों में मासिकधर्म की अनियमितता, मूत्र में जलन होना, मूत्र का रुक-रुक कर आना आदि रोगों में घृतकुमारी के सेवन से आराम हो जाता है।

पपीते के पत्तों का रस निकालकर 25-50 मिली मात्रा में प्रातः सायं सेवन करने से Platelets बढ़ते हैं।

गोमूत्र के उपयोग

प्रथम प्रयोग-

गोमूत्र साधारण रोगों के साथ-साथ कैंसर, दमा, वृक्क-निष्क्रियता, जलोदर एवं यकृत्-शोथ आदि अनेकों रोगों की निरापद औषध है। 10-15 मिली गोमूत्र का नियमित रूप से प्रतिदिन दो बार सेवन करने से उक्त सभी रोगों में शीघ्र लाभ होना प्रारम्भ हो जाता है।

आधुनिक विश्लेषणों के आधार पर गोमूत्र में नाइट्रोजन, फास्फेट, कैल्शियम, मैग्निशियम, यूरिया, यूरिक अम्ल, पोटैशियम, सोडियम कार्बोलिक अम्ल, लैक्टोज एवं हार्मोन्स पाए जाते हैं, जो सभी रोगों पर अपना-अपना प्रभाव दिखाकर रोग को समाप्त करने में सहयोग करते हैं।

गोमूत्र को यथासम्भव ताजा ही आठ तह किए कपड़े से छानकर प्रयोग करना चाहिए। तुरन्त ब्यायी या जरसी गाय का मूत्र प्रयोग नहीं करना चाहिए। बच्चा देने के 1-2 माह के पश्चात् ही गोमूत्र प्रयोग करना उचित है। प्रतिदिन ताजे गोमूत्र की अनुपलब्धता की अवस्था में गोमूत्र को छानकर शीशी में भरकर रख लें। जो मधुमेह के रोगी नहीं हैं, वे लोग इस गोमूत्र में मधु मिलाकर भी रख सकते हैं। इससे वह अधिक दिनों तक सुरक्षित रहेगा।

द्वितीय प्रयोग-

गोमूत्र को ताम्बे के पात्र में लेकर उसको पका लें। जब आधा से भी कम रह जाए तब छानकर शीशी में भरकर रख लें। 1-1 या 2-2 बूँद प्रातः सायं आँख में डालने से आँखों के समस्त रोगों में लाभ पहुँचता है।

त्रिफला के उपयोग

हरड़, बहेड़ा तथा आंवला फल के समभाग मिश्रण को त्रिफला कहते हैं। त्रिफला को आयुर्वेद में रसायन माना गया है। इसके विधिपूर्वक सेवन से रोगों का शमन तथा शरीर में बल की वृद्धि होती हैं।

त्रिफला के गुण-

1. त्रिफला कफ, पित्त, प्रमेह तथा कुष्ठ को हरने वाला, दस्तावर, नेत्रों को हितकारी, अग्नि प्रदीप्त करने वाला, रुचिवर्धक एवं विषमज्वरनाशक है।
2. 2-5 ग्राम त्रिफला चूर्ण में 125 मिली लौह भस्म मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से बाल झड़ने बंद हो जाते हैं।

3. एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि को ठंडे पानी में भिगोकर प्रातः उस जल से नेत्रों को धोने से नेत्रों के रोग मिटते हैं।
4. पित्तजनित गुल्म में द्राक्षा एवं हरड़ का 1–2 चम्मच स्वरस गुड़ मिलाकर पीना अथवा त्रिफला चूर्ण की 3–5 ग्राम मात्रा को खाँड में मिलाकर दिन में 3 बार खाना चाहिए।
5. त्रिफला, दाडिम, राजादन यें सब वायुनाशक, मूत्रदोष को मिटाने वाले हैं। हृदय के लिए पिपासानाशक है एवं रुचि उत्पन्न करने वाले हैं।
6. रात्रि में सोते समय एक चम्मच त्रिफला चूर्ण का सेवन गुनगुने जल के साथ करने से कब्ज मिटती है।
7. त्रिफला का क्वाथ बनाकर 20 मिली मात्रा में पीने से विषम ज्वर का शमन होता है।
8. आधा चम्मच त्रिफला चूर्ण को प्रातः, दोपहर व सायं जल के साथ सेवन करने से अम्लपित्त में लाभ होता है।
9. 1 चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि में 200 मिली पानी में भिगोकर रखें। प्रातः गर्म करें आधा शेष रहने पर छान लें, इसमें 2 चम्मच शहद मिलाकर सेवन करें। कुछ ही दिनों के सेवन से कई किलो वजन कम हो जाता है।

हरीतकी के उपयोग

1. हरीतकी को चबाकर खाने से जठराग्नि की वृद्धि होती है।
2. हरीतकी को पीसकर खाने से मल का शोधन होता है।
3. हरीतकी को उबालकर खाने से मल का स्तम्भन होता है।
4. हरीतकी को भूनकर खाने से त्रिदोष का शमन होता है।
5. हरीतकी को भोजन के साथ सेवन करने से बुद्धि, बल तथा इन्द्रियों को ताकत मिलती है, त्रिदोष का शमन तथा मल–मूत्र का विरेचन होता है।
6. हरीतकी को भोजन के बाद सेवन करने से अन्नपान सम्बन्धी विकारों तथा दोषों से उत्पन्न होने वाले विकारों का शमन होता है।
7. हरीतकी को सेंधा नमक के साथ खाने से कफज विकारों का शमन होता है।
8. हरीतकी को शक्कर के साथ खाने से पित्तज विकारों का शमन होता है।
9. हरीतकी को घृत के साथ खाने से वात सम्बन्धी विकारों का शमन होता है।
10. हरीतकी को गुड़ के साथ खाने से समस्त व्याधियों में लाभ होता है।

षड्ऋतु के अनुसार हरीतकी का प्रयोग

आयुर्वेद के अनुसार विविध ऋतुओं में शरीर को निरोग व स्वस्थ रखने के लिए रसायन आदि सेवन का वर्णन किया गया है। षड्ऋतुओं के अनुसार हरीतकी का विभिन्न अनुपातों के साथ सेवन करके स्वास्थ्यलाभ प्राप्त किया जा सकता है।

षड्ऋतु अनुसार रसायन औषध

हेमन्त ऋतु	आधा चम्मच हरीतकी एवं सम मात्रा में सोंठ चूर्ण का सेवन।
शिशिर ऋतु	आधा चम्मच हरीतकी एवं सम मात्रा में पिप्पली चूर्ण का ताजे जल के साथ सेवन।
वसन्त ऋतु	हरीतकी चूर्ण का सममात्रा में शहद के साथ सेवन।
ग्रीष्म ऋतु	हरीतकी चूर्ण का सममात्रा में गुड़ के साथ सेवन।
वर्षा ऋतु	हरीतकी चूर्ण का सममात्रा में सैंधव लवण के साथ सेवन।
शरद ऋतु	हरीतकी चूर्ण का सममात्रा में शर्करा के साथ सेवन।

रोगी होकर औषध सेवन करने के लिए आप जितनी जागरूकता दिखाते हैं, यदि आप उसका दशांश भी स्वस्थ रहने के प्रति जागरूक बन जाएँ तो यह निश्चित है कि रोग से पीड़ित न होना पड़ेगा।

– आचार्य बालकृष्ण

प्राथमिक चिकित्सालय अर्थात् रसोईघर

अजवायन

- जो ज्यादा एल्कोहल पीते हों तथा एल्कोहल वाला पेय (शराब) छोड़ना चाहते हों, वे 1/2 किग्रा अजवायन को 4 लीटर पानी में पकाकर तथा लगभग 2 लीटर बचने पर छानकर रखें, इसे प्रतिदिन भोजन के पहले 1-1 कप पीएं। इससे लीवर भी ठीक रहेगा। शराब पीने की इच्छा भी कम होगी।
- अजवायन को हल्का भूनकर 2-3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गुनगुने पानी या दूध के साथ लेने से सर्दी, जुकाम या पेट के रोगों में लाभ होगा।
- 2-3 ग्राम अजवायन को पाउडर करके छांछ के साथ लेने से पेट के कीड़े समाप्त होते हैं।
- 10 ग्राम अजवायन को 1 लीटर पानी में पकाकर 1/4 शेष रहने पर छानकर सुबह-शाम प्रसूता स्त्री को पिलाने से प्रसूतिजन्य विकार नहीं होते। इससे बढ़ा हुआ शरीर भी अपनी स्थिति में आता है।
- 10 ग्राम अजवायन को बारीक पीसकर उसमें 1/2 नींबू का रस निचोड़ कर डालें, 5 ग्राम फिटकरी पाउडर व छांछ को मिलाकर बालों में मलने से बालों की रूसी ठीक होती है, साथ ही लीखें तथा जूएँ मर जाती हैं।

इलायची

- मुंह में छाले हों तो इलायची को पीसकर शहद मिलाकर लगाने से छाले ठीक होते हैं।
- 2-3 ग्राम इलायची को पीसकर और उसमें मिश्री मिलाकर लेने से मूत्र की जलन व कम पेशाब आने की समस्या में तुरन्त लाभ होता है।
- हिचकी नहीं रुक रही हो तो 2 इलायची व 3 लौंग को पानी में चाय की तरह उबालकर पिला दें, ठीक हो जाएगी। यदि ठीक न हो तो यह प्रयोग दिन में 3-4 बार तक कर सकते हैं।

काली मिर्च

- खांसी अधिक आने पर यदि सो नहीं पा रहे हों तो 1-2 कालीमिर्च मुँह में रखकर चूसते रहें, खांसी में आराम हो जाएगा तथा नींद भी आ जाएगी।
- थोड़ा अदरक व 3-4 काली मिर्च मिलाकर काढ़ा बनाकर पीने से खांसी में

तुरन्त लाभ होता है, चाय के स्थान पर इसका प्रयोग कर सकते हैं।

- शीतपित्त होने पर 4-5 काली मिर्च पीसकर उसमें 1 चम्मच गुनगुने घी और शक्कर मिलाकर पिलाने पर लाभ मिलेगा।
- खांसी व उसके साथ कमजोरी भी हो तो 20 ग्राम काली मिर्च, 100 ग्राम बादाम, 150 ग्राम खाँड या मिश्री मिलाकर, कूटकर पाउडर कर शीशी में भरकर रखें, 1 ग्राम सुबह-शाम गुनगुने दूध या गुनगुने पानी के साथ लेने से पुरानी खांसी ठीक होती है। इससे कमजोरी में भी लाभ होता है।
- हिचकी या सिर दर्द में काली मिर्च के 3-4 दानों को जलाकर उसके धूएँ को सूंघने से लाभ मिलता है।

जीरा

- जब कभी दस्त लगें, तब 4-6 ग्राम जीरे को हल्का भूनकर, पीसकर दही या दही की लस्सी के साथ लेने से तुरन्त लाभ होता है।
- भूना हुआ जीरा व उतनी ही सौंफ को थोड़ा भूनकर, पीसकर 1-1 चम्मच पानी के साथ दिन में 3-4 बार लेने से मरोड़ के साथ होने वाले पतले दस्त में लाभ होता है।
- 5-7 ग्राम जीरे को 400 मिली पानी में पकाकर 1/4 भाग बचने पर प्रतिदिन दो बार पीने से आंतों के कृमि मर जाते हैं।
- 3-4 ग्राम जीरे को पानी में उबालकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से मूत्र-विकार व प्रदर रोग आदि में लाभ होता है।

दालचीनी

- दालचीनी पाचन-शक्ति को बढ़ाती है और सर्दी-जुकाम, खांसी में लाभ करती है।
- दालचीनी का फाण्ट बनाकर और उसमें अदरख, लौंग तथा इलायची मिलाकर पीने से वातज एवं कफज-विकारों का शमन होता है।
- दालचीनी चूर्ण में शहद मिलाकर सेवन करने से श्वास-कास में लाभ होता है।

धनिया

- सूखा धनिया पीस लें, उससे 4 गुना मिश्री मिलाकर शीशी में भरकर रखें। 1-1 चम्मच दो बार पानी के साथ लेने से अम्ल-पित्त में अत्यन्त लाभ होता है। इससे पेशाब भी खुलकर होता है।
- 3-4 ग्राम धनिया को 400 मिली पानी में पकाकर जब 100 मिली शेष बचे,

तब छानकर शीतल कर लें, उसमें थोड़ा शहद मिलाकर पीने से रक्तप्रदर या शरीर में होने वाली गर्मी में लाभ होता है।

- गर्भावस्था में वमन होने पर या बच्चों को वमन होने पर 2-3 ग्राम धनिये को कूटकर लगभग 400 मिली पानी में भिगोकर उसे छान लें, उसमें थोड़ा शहद मिलाकर थोड़ी थोड़ी देर में पिलाते रहें। उससे बेचैनी भी कम होगी व वमन शान्त हो जाएगा। इस प्रयोग से खूनी दस्त में भी लाभ मिलेगा।
- 4-5 ग्राम धनिया व उसकी थोड़ी पत्तियों को पीसकर चेहरे पर लगाने से चेहरा सुन्दर एवं युवान पिडका व झाइयों से रहित हो जाता है।
- जिन्हें काम-वासना ज्यादा परेशान करती हो, वे 2-3 ग्राम धनिया का पाउडर कुछ समय तक नियमित रूप से ठण्डे पानी के साथ लें। इससे काम वासना कम हो जाती है। प्रतिदिन 5-7 नीम के पत्ते चबाकर ऊपर से थोड़ा पानी पीने वाले की कामवासना शान्त हो जाती है। ऐसा करने से तीव्र अम्लता (हाईपरएसिडिटी) भी तुरन्त शान्त हो जाती है।

मेथी

- 1 चम्मच मेथी को रात को 1 कप पानी में भिगो दें। प्रातः उस पानी को पीकर मेथी को भी चबाकर खाएं। इससे मधुमेह में लाभ होगा व इससे होने वाली कमजोरी, वातरोगों व हृदयरोगों में भी लाभ होगा।
- मेथी, हल्दी तथा सोंठ को बराबर मात्रा में लेकर पाउडर करके रखें। 1-1 चम्मच सुबह-शाम गुनगुने पानी या गुनगुने दूध से सेवन करें। इससे जोड़ों का दर्द व सभी तरह के वातरोग व सूजन में लाभ होता है।
- पुराने आर्थराइटिस के रोगियों को नियमित रूप से लम्बे समय तक इसके सेवन से आशातीत लाभ होता है।
- आर्थराइटिस व मधुमेह के रोगियों को मेथी को अंकुरित करके प्रतिदिन सेवन करने से भी लाभ मिलेगा।
- मेथी को भूनकर, पीसकर, कॉफी की तरह काढ़ा बनाकर, थोड़ा सा अदरक मिलाकर पीने से सर्दी, कफ में लाभ होता है।

राई

- राई को बारीक पीसकर शोथयुक्त स्थान पर लगाकर पट्टी बाँधने से सूजन में लाभ होता है।
- सिर दर्द में राई को पीसकर माथे पर लेप करने से शक्ति मिलती है।

- राई के चूर्ण में सिरका (विनेगर) मिलाकर पीसें, इसे त्वचा रोग (दाद, खाज, खुजली) में लगाने से लाभ मिलेगा।

लौंग

- अचानक तेज सिर दर्द हो या आधासीसी का दर्द हो तब 4–5 ग्राम लौंग को पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर माथे (कनपटियों) पर लगाने से लाभ मिलता है।
- लौंग को हल्का भूनकर उसको चूसते रहने से खाँसी में चमत्कारी लाभ होता है।
- शरीर में कहीं भी नासूर या फोड़ा हो गया हो तो 5–7 लौंग व हल्दी को पीसकर लगाने से लाभ होता है।
- जाड़ (दाढ़) या दांत के दर्द में लौंग को दर्द वाले स्थान पर दबाने से या पाउडर करके उस स्थान पर लगाने से पीड़ा शान्त हो जाती है।

हल्दी

- हल्दी, नमक और थोड़ा सा सरसों के तैल को मिलाकर अंगुली से प्रतिदिन मसूड़ों की मालिश करना पायरिया, मुखदुर्गन्धि व दांतों के रोग में अत्यन्त लाभकारी है।
- 1 चम्मच हल्दी पाउडर को प्रतिदिन 1 गिलास गुनगुने दूध के साथ पीने से शरीर की रोगप्रतिरोधक–क्षमता में वृद्धि होती है। सर्दी, जुकाम आदि नहीं होते। शरीर के दर्द, चोट व पीड़ा में भी लाभ होता है।
- 1/2 चम्मच हल्दी को थोड़ा भूनकर शहद से लेने से गला बैठना या खांसी में तुरन्त लाभ होता है।
- यदि कहीं कट या जल जाए तो हल्दी पाउडर को लगाने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है। जले में फफोला भी नहीं पड़ता है।
- शरीर में कहीं मोच आ जाए तो एक मोटी रोटी बनाकर, उस पर सरसों का तैल व हल्दी डालकर, गर्म रोटी को मोच वाले स्थान पर बाँधने से सूजन व मोच में तुरन्त लाभ होता है।
- चेहरे की झाँइयों या फुन्सियों में हल्दी व चन्दन और नीम की पत्तियों को पीसकर लगाने से फुन्सियाँ ठीक होकर चेहरे की सुन्दरता भी बढ़ती है।

हींग

- हींग को जल में घिसकर नाभि के आस–पास लेप करने से अफारा व दर्द

में लाभ होता है।

- हींग को दुग्ध में घिसकर वक्ष:स्थल (छाती) पर लेप करने से सर्दी-जुकाम में लाभ होता है।

अदरक

- भोजन के आरम्भ में 3-4 ग्रास के साथ थोड़ा अदरक खाने से भूख बढ़ती है। भोजन के उपरान्त थोड़ा अदरक खाने से भोजन का पाचन होता है।
- 2 चम्मच अदरक के रस में थोड़ा शहद मिलाकर लेने से सर्दी, जुकाम व खाँसी में लाभ मिलेगा।
- यदि ठण्ड से दाँत में दर्द हो तो एक टुकड़ा अदरक को दाँत में दबाकर रखने से तुरन्त लाभ मिलेगा।
- अदरक को भूनकर इसे चूसने से खाँसी में लाभ होता है।
- 2-3 ग्राम सोंठ पाउडर में 1/2 या 1 ग्राम दालचीनी मिलाकर दूध या पानी के साथ लेने से हृदयशूल (एन्जायना) में लाभ होता है, यह हृदय को ताकत प्रदान कर पाचन प्रक्रिया को भी ठीक रखता है।
- अदरक के रस में नींबू का रस मिलाकर पीने से मन्दाग्नि दूर होकर भूख बढ़ती है।
- 2 गिलास पानी में 5 ग्राम अदरक को कूटकर और उसे उबालकर थोड़ा नींबू व शहद डालकर सुबह खाली पेट गर्म-गर्म पीने से मोटापा कम होता है।

नींबू

- नींबू के रस में शहद मिलाकर चेहरे पर लगाने से (ब्लीचिंग करने से चेहरे के कील-मुहासों में लाभ मिलेगा।
- जिन स्त्रियों को अतिरक्तस्राव (ओवर ब्लीडिंग) या रक्तार्श की समस्या हो, तो 1/2 नींबू निचोड़कर 1 कप पीने लायक गुनगुने दूध में डालकर दूध फटने से पहले ही पी जाएं। यह प्रयोग सुबह खाली पेट या ऋतुकाल में कभी भी कर सकते हैं। इससे रक्तस्राव में तुरन्त लाभ होगा। यह चामत्कारिक प्रयोग है। यह प्रयोग 3-4 दिन करें। यदि पूर्ण लाभ न मिले तो चिकित्सक को अवश्य दिखाएं।
- 10 मिली नींबू रस में प्याज का रस 20 मिली व इच्छानुसार शहद मिलाकर पीने से लीवर के रोग, मन्दाग्नि व अजीर्ण में लाभ होता है।
- नींबू के रस में थोड़ा अदरक व थोड़ा नमक मिलाकर भोजन के साथ लेने

से भूख बढ़ती है। इससे पाचन क्रिया भी सुधरती है।

- गाड़ी में यात्रा करते समय जिन्हें उलटी होती हो या जी मिचलाता हो, उन्हें थोड़ा नमक लगाकर नींबू चूसने से लाभ होगा।

प्याज

- कान दर्द या नजला में कच्चे प्याज को गुनगुना कर उसका रस निकालकर 4-4 बूंद कान या नाक में डालने से तुरन्त लाभ होता है।
- जहाँ ज्यादा गर्मी या लू का प्रकोप होता हो और यदि धूप में जाना या घूमना हो तो एक प्याज को जेब में रखने या गले में बाँधकर रखने से लू का भय नहीं रहता।
- 1 पोटली में 8-10 प्याज बाँधकर घर के बाहर टांगने से हवा से फैलने वाले अनेक तरह के बैक्टीरिया व वायरस से बच्चों को बचाने में सहयोग मिलता है।
- छोटी माता या बड़ी माता रोग हो जाय तो 1-1 चम्मच प्याज के रस में 2-3 काली मिर्च पीसकर कुछ दिन तक दिन में 2-3 बार पिलाने से ठीक होता है, बाद में उसके निशान भी नहीं रहते हैं।
- कच्चे प्याज को गर्म करके फोड़े आदि में बाँधने से तुरन्त पीड़ा का शमन होता है तथा फोड़ा पक जाता है एवं उसका मवाद भी आराम से निकल जाता है।
- पेट में दर्द होने पर पानी में प्याज का रस, नींबू का रस व नमक मिलाकर पिला दें, तुरन्त राहत मिलेगी।

लहसुन

- 1 पोथी लहसुन को टुकड़े करके रात को पानी में भिगो दें। प्रातःकाल खाली पेट लेने से कॉलेस्ट्राल, हृदय रोग व सन्धिवात में लाभ मिलेगा।
- 50 ग्राम लहसुन को कूटकर सौ ग्राम सरसों के तेल, तिल के तेल या जैतून के तैल में पकाकर, छानकर रखें। इसके प्रयोग से सूजन व दर्द में लाभ होता है। यह एक अच्छा प्रयोग है।
- कान दर्द होने पर इस तेल की 3-3 बूंद कान में भी डाल सकते हैं।
- जहाँ ऑक्सीजन की कमी हो, वहाँ पर एक लहसुन को ताबीज की तरह गले में लटकाकर रखने से राहत मिलती है।

घृतकुमारी (एलोवेरा)

- घृतकुमारी के गुद्दे को निकालकर, टुकड़े बनाकर सब्जी की तरह पकाकर

खाने से सन्धिवात, वायु विकार, पेट व यकृत् के विकारों का शमन होता है।

- कटे हुए या जले हुए स्थान पर उसी समय एलोवेरा जेल या रस लगाने से फफोला नहीं पड़ता, रक्त रुक जाता है तथा जख्म जल्दी ठीक हो जाता है।
- 4-6 चम्मच एलोवेरा रस प्रतिदिन पीने से पेट के समस्त रोगों व शरीरगत कमजोरी में लाभ होता है।
- एलोवेरा जेल को चेहरे पर लगाने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है तथा झाँइयां, कील, मुँहासों में लाभ होता है।
- हाथ-पैरों की रूक्षता में एलोवेरा जेल लगाने से तुरन्त लाभ होता है।
- ताजा पत्ता लेकर छिलका उतारकर अन्दर के गुद्देदार भाग या रस को निकालकर 20 से 40 मिली मात्रा में सेवन करें। यह सभी वात-रोग, जोड़ों का दर्द, उदर-रोग, अम्लपित्त, मधुमेह इत्यादि में लाभप्रद है।

शहद

- आधा चम्मच दालचीनी पाउडर एवं एक चम्मच शहद के नियमित प्रयोग से रोगप्रतिरोधक-क्षमता की वृद्धि होती है एवं यह साइनस और तीव्र जुकाम में भी लाभदायक है।
- आंखों की ज्योति बढ़ाने के लिए 2 चम्मच शहद को गाजर के रस में मिलाकर नियमित सेवन करें।
- सर्दी-जुकाम, खांसी में 2 चम्मच शहद और उसके बराबर मात्रा में अदरख रस मिलाकर बार-बार चाटें।
- काली मिर्च पाउडर, शहद और अदरख रस बराबर मात्रा में, रोजाना दिन में तीन बार लेने से श्वास, कास में आराम मिलता है।
- रक्तचाप नियन्त्रण के लिए 1 चम्मच लहसुन रस में 2 चम्मच शहद मिलाकर नियमित सेवन करें।
- 1 गिलास गुनगुने जल में 2 चम्मच शहद एवं 1 चम्मच नींबू रस मिलाकर रोज सुबह-शाम खाली पेट सेवन करने से मोटापा कम होता है।
- रोज एक चम्मच शहद का सेवन करने से मनुष्य लम्बी और स्वस्थ जिन्दगी जी सकता है।

पंचामृत

- गिलोयरस 10 से 20 मिली, घृतकुमारी स्वरस 10 से 20 मिली, गेहूँ के ज्वारे 10 से 20 मिली, तुलसी 7 पत्ते तथा नीम 7 पत्ते सुबह शाम खाली

पेट सेवन करने से कैंसर से लेकर सभी असाध्य रोगों में अत्यन्त लाभ होता है यह पंचामृत शरीर की शुद्धि व रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

गिलोय

- सर्दी जुकाम, बुखार आदि में एक अंगुल मोटी व 4 से 6 इंच लम्बी गिलोय लेकर 400 मिली पानी में उबालें, 100 मिली रहने पर पिएं। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून-सिस्टम) को मजबूत कर त्रिदोष का शमन करती है व सभी रोगों, बार-बार होने वाली सर्दी-जुकाम, बुखार आदि को ठीक करती है।

तुलसी

- प्रातःकाल खाली पेट 5 से 10 ताजा तुलसी के पत्ते पानी के साथ लें। इसमें प्रचुर मात्र में एन्टी-ऑक्सीडेन्ट होते हैं। यह रोगप्रतिरोधक-क्षमता को बढ़ाकर सर्दी-जुकाम बुखार से लेकर कैंसर तक में लाभकारी है।

कुछ अन्य प्रयोग

- 2-3 ग्राम दालचीनी व उसमें 2-3 लौंग डालकर पानी को चाय की तरह उबालकर पीने से हृद्शूल में लाभ होता है तथा हृदय की बढ़ी हुई धड़कन सामान्य हो जाती है। इससे वायरल संक्रमण में भी लाभ होता है।
- इलायची, दालचीनी तथा सोंठ का पाउडर करके नियमित दूध में डालकर या पानी से सेवन करने से हृदय को ताकत मिलती है। रोगप्रतिरोधक-क्षमता बढ़ती है।
- करेला, खीरा तथा टमाटर का ताजा रस निकालकर एक कप रस सुबह खाली पेट पिया जाय तो इससे मधुमेह में लाभ होता है तथा पाचन-क्रिया ठीक रहती है।
- लौकी का ताजा रस निकालकर प्रतिदिन सुबह पीने से हृदय के लिए व सामान्य स्वास्थ्य (जनरल हैल्थ) के लिए बहुत अच्छा रहता है। इसमें सेव का रस भी मिलाकर पी सकते हैं। सर्दी हो तो थोड़ा अदरक का रस या सोंठ मिलाकर पीएं। यह कॉलेस्ट्राल भी कम करता है।
- जिन्हें तेज बुखार हो तो उन्हें दवाइयों के साथ-साथ सामान्य उपचार के रूप में लौकी को गोलाई से काटकर पैर के तलवों में रखना चाहिए। इससे रोगी को शान्ति मिलती है, बुखार जल्दी उतरता है।
- जिन्हें रक्ताल्पता कमजोरी हो, उन्हें अनार, सेव के साथ पालक का रस

निकालकर पीने से जल्दी लाभ मिलेगा।

- जिनका पेट ठीक से साफ न होता हो उन्हें पपीता का सेवन अधिक करना चाहिए। उससे पेट साफ होगा व लीवर भी ठीक रहेगा।
- 5-7 बादाम, 5-10 ग्राम अखरोट तथा 4-5 काली मिर्च को रात को भिगोकर सुबह पीसकर या अच्छी तरह चबाकर खाने से याददाश्त व शारीरिक शक्ति बढ़ती है।
- 10-10 ग्राम मुनक्का या किशमिश व 4-5 अंजीर तथा 8-10 बादाम को रात में भिगोकर प्रतिदिन सुबह सेवन करते हैं, तो यह बलकारक व उदर-रोगों में लाभकारी है।
- मुनक्का व अंजीर को दूध में पकाकर सेवन करने से पाचन क्रिया में सुधार तथा बल की वृद्धि होकर कमजोरी दूर होती है।
- सर्दी के मौसम में छोहारा या खजूर को दूध में पकाकर सेवन करना भी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

संस्थान द्वारा निर्मित मुख्य शास्त्रीय योग

दिव्य आरोग्यवर्धिनी वटी

मुख्य गुण-धर्म : त्वचा विकारों, यकृत् विकारों, मोटापा एवं जीर्ण ज्वर में लाभप्रद।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें अथवा रोगी की आवश्यकता के अनुसार या चिकित्सकीय परामर्शानुसार अन्य औषध के साथ सेवन करें।

दिव्य खदिरादि वटी

मुख्य गुण-धर्म : गले की खराश, खाँसी, मुंह के छाले तथा मुख दौर्गन्ध्य आदि विकारों में लाभप्रद।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार मुंह में रखकर चूसें अथवा रोगी की आवश्यकता के अनुसार या चिकित्सकीय परामर्शानुसार अन्य औषध के साथ सेवन करें।

दिव्य चन्द्रप्रभा वटी

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह मूत्रेन्द्रिय व गर्भाशयगत दोष और वीर्य विकारों की सुप्रसिद्ध औषध है।
2. चन्द्रप्रभा वटी मूत्रकृच्छ्र (प्रॉस्टेट), मूत्रघात, जोड़ों का दर्द, गठिया, सर्वाइकल स्पोण्डलाइटिस, सियाटिका, कमजोरी, पथरी, सर्वप्रमेह, भगन्दर, अण्डवृद्धि, पीलिया, कामला, अर्श, कटिशूल आदि विकारों को नष्ट करके शरीर का पोषण करती है।
3. यह बलवर्धक, पोषक तथा कान्तिवर्धक है। प्रमेह और उससे पैदा हुए उपद्रवों पर इसका धीरे-धीरे स्थायी प्रभाव होता है। सुजाक आदि के कारण वीर्य में जो विकार

उत्पन्न होते हैं, उन्हें यह नष्ट कर देती है। अधिक शुक्रक्षरण या रज:स्राव हो जाने से पुरुष-स्त्री दोनों की शारीरिक कान्ति नष्ट हो जाती है। शरीर कमजोर होना, शरीर का रंग पीला पड़ जाना, मंदाग्नि, थोड़े परिश्रम से हाँफना, आँखें अन्दर धंस जाना, भूख खुलकर न लगना आदि विकारों में चन्द्रप्रभावटी के सेवन से रक्तादि धातुओं की पुष्टि होती है, वायु का शमन होता है तथा शरीर पुष्ट होकर कान्तिमान् एवं ओजपूर्ण हो जाता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1-1 या 2-2 गोली दिन में दो या तीन बार गुनगुने जल या गुनगुने दूध के साथ सेवन करें अथवा रोगी की आवश्यकता के अनुसार अन्य औषध के साथ सेवन करें।

दिव्य चित्रकादि वटी

मुख्य गुण-धर्म : भूख न लगना, अग्निमांद्य, अजीर्ण व विबंध आदि सब तरह के उदरविकारों में लाभप्रद।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार मुंह में रखकर चूसें अथवा रोगी की आवश्यकता के अनुसार या चिकित्सकीय परामर्शानुसार अन्य औषध के साथ सेवन करें।

दिव्य महासुदर्शन वटी

मुख्य गुण-धर्म : सभी तरह के ज्वर विशेषतया जीर्ण ज्वर तथा विषम ज्वर में लाभप्रद।

दिव्य विषतिन्दुक वटी

मुख्य गुण-धर्म : नसों में होने वाली वेदना, संधिवात, सर्वाङ्गशूल, तंत्रिकाशूल तथा बहुमूत्रता आदि विकारों में अत्यन्त लाभकारी।

दिव्य वृद्धिवाधिका वटी

मुख्य गुण-धर्म : गाँठ, हर्निया, थायराइड की विकृति एवं अण्डकोष की वृद्धि आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य संजीवनी वटी

मुख्य गुण-धर्म : जीर्ण ज्वर, कफ, सर्दी, जुकाम, श्वास नली के संक्रमण व अन्य वायरल संक्रमणों में अत्यन्त लाभकारी।

दिव्य लवंगादि वटी

मुख्य गुण-धर्म : जुकाम, सर्दी, खाँसी तथा कफज विकारों में लाभप्रद।

दिव्य सारिवादि वटी

मुख्य गुण-धर्म : कर्णशूल, कर्णशोथ आदि कर्ण रोगों में लाभप्रद।

सभी वटियों की सामान्य सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें अथवा रोगी की आवश्यकता के अनुसार या चिकित्सकीय परामर्शानुसार अन्य औषध के साथ सेवन करें।

दिव्य कांचनार गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : गुर्दे की पथरी, मूत्रनली संक्रमण, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रदाह आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य कैशोर गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : वातरक्त, व्रण, कुष्ठ, गुल्म, पिड़िका, वातज विकार, रक्तज विकार तथा त्वचा विकारों में लाभप्रद।

दिव्य गोक्षुरादि गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : गुर्दे की पथरी, मूत्र नली का संक्रमण, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रदाह, शोथ आदि मूत्र विकारों में लाभप्रद।

दिव्य त्रयोदशांग गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : कटि स्नायुशूल, नसों का दर्द, संधिवात तथा वातरक्त आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य त्रिफला गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : बवासीर, भगन्दर, वातज वेदना, पक्षाघात, गृध्रसी आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य महायोगराज गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : समस्त वात विकार, आमवात, पक्षाघात, संधिवात, वातरक्त, व मेदोवृद्धि में लाभप्रद।

दिव्य योगराज गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : संधिशूल, गठिया आदि जोड़ों के विकारों में लाभप्रद।

दिव्य लाक्षादि गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : अस्थिभंग, आघातजन्य शूल, शोथ, अस्थिभंगुरता आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य सिंहनाद गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : आमवात, पक्षाघात, संधिवात, संधिशूल आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य सप्तविंशति गुग्गुलु

मुख्य गुण-धर्म : शोथ, मूत्रनली के विकार, जोड़ों का दर्द आदि विकारों में लाभप्रद।

सामान्य सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें अथवा रोगी की आवश्यकता के अनुसार या चिकित्सकीय परामर्शानुसार अन्य औषध के साथ सेवन करें।

दिव्य अश्वगन्धा चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : तनाव, थकान, शारीरिक दुर्बलता, कृशता, स्नायु विकार आदि में लाभप्रद।

दिव्य अविपत्तिकर चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : अम्लपित्त, अपच, विबन्ध, आध्मान व उदावर्त आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य गंगाधर चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : अतिसार, प्रवाहिका तथा संग्रहणी आदि उदर विकारों में लाभप्रद।

दिव्य त्रिकटु चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : अजीर्ण, अपच, खाँसी, गले के रोगों व कफज रोगों में लाभप्रद।

दिव्य त्रिफला चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : दृष्टि विकारों, उदर विकारों तथा पाचन सम्बन्धी विकारों में लाभप्रद।

दिव्य पंचकोल चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : अरुचि, विबन्ध, उदरशूल, श्वास-कास, ज्वर, सर्वाङ्ग शूल तथा अग्निमांद्य में हितकर।

दिव्य पुष्यानुग चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर आदि सभी प्रकार के स्त्री विकारों में लाभप्रद।

दिव्य बाकुची चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : श्वेत कुष्ठ, त्वचा रोग व त्वचा की विवर्णता आदि त्वचा विकारों में लाभप्रद।

दिव्य बिल्वादि चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी, आन्त्रविकार व आमदोष में लाभप्रद।

दिव्य लवणभास्कर चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : मन्दाग्नि, आध्मान, उदरशूल आदि पाचन सम्बन्धी विकारों में लाभप्रद।

दिव्य सितोपलादि चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : सर्दी, खाँसी, ज्वर तथा अस्थमा में लाभप्रद।

दिव्य हरीतकी चूर्ण

मुख्य गुण-धर्म : अपच, अजीर्ण, विबन्ध आदि उदर विकारों में लाभप्रद।

समस्त चूर्णों की सामान्य सेवन-विधि व मात्रा :

आधा या एक चम्मच (लगभग 2-5 ग्राम) चूर्ण खाली पेट या खाने के बाद रोगों के अनुसार प्रात: सायं ताजे जल या गुनगुने जल के साथ सेवन करना चाहिए।

दिव्य अर्जुन क्वाथ

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के हृदय विकारों में लाभप्रद।

दिव्य गिलोय क्वाथ

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के ज्वर, खाँसी, त्वचा विकारों, विषम ज्वर तथा सभी प्रकार के संक्रमण में लाभप्रद।

दिव्य दशमूल क्वाथ

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के ज्वर, वात विकारों एवं स्त्री रोगों में लाभप्रद।

दिव्य महामंजिष्ठादि क्वाथ

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के त्वचा रोगों में लाभप्रद एवं रक्तशोधक।

दिव्य मुलेठी क्वाथ

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के संक्रमण, ज्वर, अम्लपित्त, अजीर्ण आदि उदर विकारों तथा कफज विकारों में लाभप्रद।

समस्त क्वाथों की सामान्य मात्रा एवं उपयोग-विधि :

5-10 ग्राम क्वाथ द्रव्य को लेकर लगभग 400 मिली पानी में पकाएं जब लगभग 100 मिली शेष रह जाए तो छानकर, प्रातः खाली पेट व रात्रि को भोजन से 1 घण्टा पहले या चिकित्सक के परामर्शानुसार सेवन करें।

दिव्य अर्जुनारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : हृदय रोग, घबराहट, हृदयशूल, उच्चरक्तचाप आदि में लाभप्रद।

दिव्य अभयारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : बवासीर, नाड़ीव्रण, विबन्ध, उदर विकार एवं मूत्रकृच्छ्र में लाभप्रद।

दिव्य अरविन्दासव

मुख्य गुण-धर्म : बच्चों की वृद्धि एवं सभी तरह के बाल रोगों में लाभप्रद।

दिव्य अश्वगन्धारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : तनाव, थकान, अवसाद, शिथिलता, स्नायुदुर्बलता, अनिद्रा, स्नायुदुर्बलता आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य अशोकारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : मासिकधर्म सम्बन्धी सभी विकारों, श्वेतप्रदर, सामान्य दौर्बल्य तथा चिड़चिड़ाहट आदि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य उशीरासव

मुख्य गुण-धर्म :

नकसीर (नाक से रक्तस्राव) एवं मूत्रनली के संक्रमण में लाभप्रद व रक्तशोथ, रक्तार्श व विबन्ध में हितकारी।

दिव्य कुटजारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : आमदोष, प्रवाहिका, अग्निमांद्य, अजीर्ण, संग्रहणी एवं अतिसार आदि उदर विकारों में लाभप्रद।

दिव्य कुमार्यासव

मुख्य गुण-धर्म : यकृत् शूल, यकृत शोथ आदि यकृत् विकारों तथा उदर विकारों में लाभप्रद।

दिव्य खदिरारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : चेहरे के दाग, धब्बे, कील-मुहासे एवं सभी तरह के रक्त विकार व चर्म रोगों में लाभप्रद।

दिव्य पत्रांगासव

मुख्य गुण-धर्म : श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, मासिकविकार आदि स्त्री विकारों में लाभप्रद।

दिव्य पुनर्नवारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : रक्ताल्पता, शोथ, पीलिया व यकृत् सम्बन्धी समस्याओं में लाभप्रद।

दिव्य विडंगासव

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के कृमि रोगों एवं उदर सम्बन्धी विकारों में लाभप्रद।

दिव्य सारस्वतारिष्ट

मुख्य गुण-धर्म : स्मृतिलोप, मनोवसाद, अपस्मार एवं अन्य मानसिक विकारों में लाभप्रद।

समस्त आसवों व अरिष्टों की सामान्य मात्रा एवं उपयोग-विधि :

उपरोक्त सभी औषधियों को 3-4 चम्मच लेकर बराबर मात्रा में जल मिलाकर भोजन के पश्चात् दिन में दो बार सेवन करें। बच्चों को 1-1 चम्मच या 2-2 चम्मच समभाग जल मिलाकर सेवन कराएं।

दिव्य आमलकी रसायन

मुख्य गुण-धर्म : शास्त्र के अनुसार आमलकी रसायन अति दीर्घ आयु करने वाला, जरा व्याधियों को शान्त करने वाला, बुद्धि एवं समस्त इन्द्रियों के बल की वृद्धि करने वाला है। इस रसायन को ब्रह्मा ने बनाया था तथा वशिष्ठ, कश्यप, अंगिरा, भारद्वाज, जमदग्नि एवं भृगु आदि ऋषियों ने

प्रयोग किया, जिससे वे रोग एवं वृद्धावस्था से मुक्त हो गये थे। यह नेत्र रोग, केश रोग व अन्य उदर सम्बन्धी विकारों को दूर करता है व आयुवर्धक निरापद रसायन है।

दिव्य एकांगवीर रस

मुख्य गुण-धर्म : कटि, स्नायुशूल, नसों की समस्याओं, पक्षाघात व वात विकार में लाभप्रद।

दिव्य कामदुघा रस

मुख्य गुण-धर्म : अम्लपित्त, आन्त्रशोथ (अल्सर) तथा उदर विकारों में लाभप्रद।

दिव्य कुमारकल्याण रस

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के शिशु रोगों में लाभप्रद। बच्चों के आरोग्य वृद्धि एवं शारीरिक पुष्टी में सहायक।

दिव्य त्रिभुवन कीर्ति रस

मुख्य गुण-धर्म : सर्दी, खांसी तथा ज्वर में लाभप्रद।

दिव्य प्रवाल पंचामृत रस

मुख्य गुण-धर्म : उदर विकार, अम्लपित्त तथा समस्त पाचन व शूलरोगों में लाभप्रद।

दिव्य बृहत् वातचिंतामणि रस

मुख्य गुण-धर्म : पक्षाघात तथा सभी प्रकार के जोड़ों के दर्द व वातरोगों में लाभप्रद।

दिव्य महाविध्वंसन रस

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के जोड़ों के दर्द व वातरोगों में लाभप्रद।

दिव्य योगेन्द्र रस

मुख्य गुण-धर्म : पक्षाघात, मिरगी, हृदयरोग, बेचैनी व मानसिक विकारों में लाभप्रद।

दिव्य रसराज रस

मुख्य गुण-धर्म : लकवा तथा अर्दित, (मुख पक्षाघात), स्नायु विकार, तन्त्रिका विकार व मस्तिष्क एवं शरीर को तन्दुरस्ती प्रदान करने वाली।

दिव्य लक्ष्मीविलास रस

मुख्य गुण-धर्म : सर्दी तथा खांसी, जीर्ण प्रतिश्याय व नासागत रोगों, गृध्रसी आदि रोगों में लाभप्रद।

दिव्य वसन्तकुसुमाकर रस

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह हृदय को बल देने वाला शक्तिवर्धक, बहुमूत्रता, हर प्रकार के प्रमेह, सोमरोग, श्वेतप्रदर, योनि तथा गर्भाशय विकारों, वीर्य विकारों को दूर करने वाला उत्तम तथा अद्‌भुत रसायन है। वीर्य की कमी से उत्पन्न क्षय रोग की यह बहुमूल्य औषधि है।
2. इसके सेवन से हृदय एवं फेफड़ों की कमजोरी, शूल तथा दिमागी कमजोरी, भ्रम, याददाश्त की कमी, नींद न आना, जीर्ण, रक्तपित्त, कफ, खाँसी, श्वास, संग्रहणी, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, खून की कमी और बुढ़ापे की कमजोरी व रोग निवृत्ति के बाद की कमजोरी दूर होती है।
3. मधुमेह रोग की यह प्रसिद्ध औषधि है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 रत्ती (125-250 मिग्रा) तक मक्खन, मलाई, शहद या दूध के साथ सुबह-शाम सेवन करें।

दिव्य स्वर्ण वसन्तमालती रस

मुख्य गुण-धर्म : शिथिलता, रोगप्रतिरोधक क्षमता का अभाव, बहुमूत्रता तथा राजयक्ष्मा में लाभप्रद।

समस्त रसों की सामान्य मात्रा एवं उपयोग-विधि :

रसौषधियाँ अति अल्प मात्रा में भी अत्यन्त प्रभावकारी होती हैं। अतः सभी रसौषधियों का प्रयोग उचित वैद्यकीय देख-रेख में या अन्य सहयोगी औषधियों के अनुपान के साथ सेवन करना चाहिए।

दिव्य फलघृत

मुख्य गुण-धर्म : गर्भाशय के विकारों, स्त्री रोग नाशक, गर्भ धारण में सहयोगी तथा बार-बार होने वाले गर्भपात में लाभप्रद।

उपयोग-विधि : 1 चम्मच प्रातः सायं गुनगुने जल के साथ सेवन करें या चिकित्सक के परामर्शानुसार प्रयोग करें।

दिव्य महात्रिफलादि घृत

मुख्य गुण-धर्म : समस्त प्रकार के नेत्ररोग, दृष्टि विकार व केशरोग एवं उदररोग व शिथिलता में लाभकारी।

उपयोग-विधि : 1 चम्मच प्रातः सायं गुनगुने जल के साथ सेवन करें या चिकित्सक के परामर्शानुसार प्रयोग करें।

दिव्य षड्बिन्दु तैल

मुख्य गुण-धर्म : सिरदर्द, सर्दी, कफ व सभी तरह के नासागत रोग एवं साइनस के संक्रमण में लाभप्रद।

उपयोग-विधि : 2-2 बूँद नाक में डालें या चिकित्सक के परामर्शानुसार प्रयोग करें।

दिव्य कासीस भस्म

मुख्य गुण-धर्म : रक्ताल्पता, यकृत्प्लीहा-वृद्धि आदि में लाभप्रद।

दिव्य कुलिया भस्म

मुख्य गुण-धर्म : मिरगी, उन्माद तथा नसों से सम्बन्धि विकारों में लाभप्रद।

दिव्य गोदन्ती भस्म

मुख्य गुण-धर्म : सिरदर्द, ज्वर, खाँसी तथा अस्थमा में लाभप्रद, कैल्शियम का प्राकृतिक स्रोत।

दिव्य टंकण भस्म

मुख्य गुण-धर्म : खाँसी और जुकाम, कफज व छोटे बच्चों के दाँत निकलते समय होने वाली परेशानी में लाभप्रद।

दिव्य ताम्र भस्म

मुख्य गुण-धर्म : कैंसर, ट्यूमर, किसी भी तरह की गाँठ तथा उदर सम्बन्धी विकारों में लाभपद्र।

दिव्य त्रिवंग भस्म

मुख्य गुण-धर्म : मधुमेह, स्त्री एवं पुरुष सम्बन्धित धातुरोग तथा मूत्र सम्बन्धी समस्याओं में लाभप्रद।

दिव्य मण्डुर भस्म

मुख्य गुण-धर्म : यकृत् विकारों, पीलिया, रक्ताल्पता, शोथजन्य विकारों में लाभप्रद।

दिव्य मुक्ताशुक्ति भस्म

मुख्य गुण-धर्म : उदरशूल, ज्वर तथा अम्लपित्त में लाभप्रद।

दिव्य रजत भस्म

मुख्य गुण-धर्म : इसका सेवन स्नायु, वातरोग व मिरगी में लाभप्रद है।

दिव्य लौह भस्म

मुख्य गुण-धर्म : रक्ताल्पता, अम्लपित, पीलिया तथा अन्य उदर संबंधी समस्याओं में लाभप्रद।

दिव्य वंग भस्म

मुख्य गुण-धर्म : मधुमेह तथा मूत्र संस्थानगत रोग, नपुंसकता में लाभप्रद।

दिव्य शंख भस्म

मुख्य गुण-धर्म : उदर सम्बन्धी विकारों अफारा, अपच जैसे जीर्ण रोगों में लाभप्रद।

दिव्य स्फटिक भस्म

मुख्य गुण-धर्म : अति रक्तस्राव, खांसी, श्वास संबंधी विकार तथा व्रण रोपक व शोधक, नाक से रक्तस्राव के दौरान लाभप्रद।

दिव्य स्वर्ण माक्षिक भस्म

मुख्य गुण-धर्म : रक्ताल्पता, पीलिया, अनिद्रा, संधिगत दुर्बलता व स्नायु विकार तथा बारम्बार होने वाले ज्वर में लाभप्रद।

दिव्य स्वर्ण भस्म

मुख्य गुण-धर्म :

1. सोना एक श्रेष्ठतम धातु है। अतः उससे प्राप्त भस्म भी शारीरिक और मानसिक विकृतियों का शमन करने में बहुत महत्वपूर्ण है। इसके सेवन से प्रायः सभी रोगों में चमत्कारिक लाभ होता है।
2. विषविकार, निर्बलता, धातुक्षीणता, अत्यन्त विकृत गठिया, काला ज्वर, मलेरिया आदि से पीड़ित व अत्यन्त क्षीण अवस्था को प्राप्त रोगी, जो अन्य किसी औषधि से ठीक न हो रहा हो, स्वर्णघटित औषध के प्रयोग से ठीक हो जाता है।
3. स्वर्ण भस्म तेजस्वी होते हुए भी सौम्य पदार्थ है। यह दूषित रक्त को शुद्ध कर हृदय को पुष्ट करते हुए मस्तिष्क, स्नायु मण्डल, मूत्रपिण्ड और शरीर के अन्य अंगों पर एक प्रकार का स्फूर्तिदायक प्रभाव डालता है, जिससे शरीर की ओज-कान्ति बढ़ती है। शरीर में नूतन चेतना व मन में उमंग पैदा होती है। यह शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि कर, बढ़े हुए विजातीय तत्व को समाप्त करती है।

दिव्य हजरूलयहूद भस्म

मुख्य गुण-धर्म : मूत्रनली या गुर्दे की पथरी, मूत्र विसर्जन में कठिनाई तथा पेशाब में जलन आदि रोगों में लाभप्रद।

दिव्य हीरक भस्म

मुख्य गुण-धर्म : कैंसर, सभी प्रकार के ट्यूमर तथा अत्यन्त शारीरिक दुर्बलता व नपुंसकता आदि के उपचार में लाभप्रद।

दिव्य अकीक पिष्टी

मुख्य गुण-धर्म : ज्वर तथा हृदय विकारों में लाभप्रद।

दिव्य कहरवा पिष्टी

मुख्य गुण-धर्म : खूनी पेचिश तथा अतिरक्तस्राव व रक्तप्रदर आदि में लाभप्रद।

दिव्य जहर मोहरा पिष्टी

मुख्य गुण-धर्म : उच्च रक्तचाप में लाभप्रद, हृदय को बल देने वाली, विषनाशक निरापद औषध।

दिव्य प्रवाल पिष्टी

मुख्य गुण-धर्म : खाँसी, ज्वर, अस्थिमृदुता, शिथिलता तथा अम्लता में लाभप्रद।

दिव्य मुक्ता पिष्टी

मुख्य गुण-धर्म :

1. मुक्ता पिष्टी रक्तपित्त, कमजोरी, सिर दर्द, पित्त की वृद्धि, दाह, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र आदि को दूर करती है।
2. इसके सेवन से पित्त की तीव्रता और अम्लता तुरन्त कम हो जाती है तथा नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। हृदय की बढ़ी हुई धड़कन एवं अनिद्रा रोग में मोतीपिष्टी से विशेष लाभ होता है। मूत्रदाह, सर्वांग दाह, निद्रा का अभाव, चिड़चिड़ापन आदि में मुक्ता पिष्टी के सेवन से शीघ्र लाभ मिलता है।
3. गर्मी के दिनों में कड़ी धूप में घूमने-फिरने या अग्नि के पास ज्यादा देर काम करने से, नाक, मुँह तथा गुदामार्ग से रक्त गिरने लगता है। साथ ही कपाल, नेत्र तथा सर्वांग में दाह होने लगता है। रोगी बेचैन हो जाता है। ऐसे लक्षणों में मुक्ता पिष्टी का सेवन अतिलाभकारी है।
4. पित्तजन्य क्षय में जब दाह, तृष्णा, बुखार, बेचैनी आदि लक्षण हों तो मुक्ता पिष्टी का सेवन लाभदायक है। अम्लपित्त में जब कण्ठ में जलन हो, गर्मी के साथ खट्टी डकारें आती हों तो मुक्ता पिष्टी तुरन्त लाभ पहुँचाती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 रत्ती (125-250 मिग्रा) तक, मक्खन, मलाई, शहद, च्यवनप्राश, गुलकन्द, आँवले का मुरब्बा, ब्राह्मी शरबत आदि के साथ सेवन करें।

दिव्य श्वेत पर्पटी

मुख्य गुण-धर्म : मूत्रकृच्छ्र, वृक्क व मूत्रनली की पथरी में लाभकारी व पेशाब सम्बन्धी दाह को शान्त करने वाली संग्रहणी में लाभप्रद।

समस्त पिष्टी व भस्मों की सामान्य मात्रा एवं उपयोग-विधि :

शुद्ध एवं शास्त्रीय विधि से निर्मित भस्में अत्यन्त प्रभावकारी एवं रोगों को समूल नष्ट करने वाली होती हैं, भस्मों का सेवन उचित अनुपान व आयु, बल का विचार करके किसी योग्य चिकित्सक के परामर्श से ही करना चाहिए।

दिव्य ताल सिंदूर

मुख्य गुण-धर्म : श्वसन एवं त्वचा-रोगों में लाभदायक।

दिव्य पुनर्नवादि मण्डूर

मुख्य गुण-धर्म : शोथ, रक्ताल्पता तथा प्लीहा वृद्धि में लाभप्रद।

दिव्य मकरध्वज

मुख्य गुण-धर्म : सामान्य स्वास्थ्य के लिए टॉनिक तथा काम शक्ति वर्धक।

दिव्य रस सिंदूर

मुख्य गुण-धर्म : ज्वर एवं मधुमेह में लाभदायक।

दिव्य शिला सिंदूर

मुख्य गुण-धर्म : श्वसन रागों में लाभदायक।

दिव्य सप्तामृत लौह

मुख्य गुण-धर्म : सभी प्रकार के दृष्टि तथा उदर विकारों में लाभप्रद।

समस्त लौह-मण्डूर तथा रसायन (कूपीपक्व रसायन) सिन्दूर की सामान्य मात्रा एवं उपयोग-विधि :

कूपीपक्व रसायन व सिन्दूर का प्रयोग दूसरी औषधियों के साथ अनुपान भेद व आयु एवं शारीरिक अवस्था को ध्यान में रखकर किया जाता है, अतः कुशल वैद्य के निरीक्षण में ही सेवन करें।

दिव्य च्यवनप्राश

मुख्य गुण-धर्म :

1. च्यवनप्राश केवल रोगियों के लिए ही नहीं बल्कि स्वस्थ मनुष्य के लिए भी उत्तम रसायन है।
2. किसी भी कारण से उत्पन्न शारीरिक और मानसिक दुबर्लता को दूर कर फेफड़ों को मजबूत करता है तथा कफज विकारों को दूर कर शरीर को हृष्ट-पुष्ट बना देता है।
3. यह रस रक्तादि सातों धातुओं को पुष्ट करके बल, वीर्य, कान्ति, शक्ति और बुद्धि को बढ़ाता है।
4. इसका सेवन बच्चे, स्त्री-पुरुष व वृद्धजन सभी समान रूप से कर सकते हैं।

सेवन-विधि व मात्रा :

एक से दो चम्मच अर्थात् डेढ़ से ढाई तोला, दिन में दो बार खाएँ। दूध आधे घण्टे बाद पिएं।

दिव्य बादाम पाक

मुख्य गुण-धर्म :

1. बादाम पाक एक पौष्टिक रसायन है। इसके सेवन से दिमाग एवं हृदय की दुर्बलता, पित्त-विकार तथा नेत्र रोग दूर होते हैं।
2. सिर-दर्द के लिए यह चमत्कारिक औषधि है। दिमागी काम करने वालों को इसका सेवन अवश्य करना चाहिये।
3. इसके सेवन से शरीर पुष्ट होता है। यह बल वीर्य और ओज की वृद्धि करता है। ध्वजभंग, नपुंसकता, स्नायु दौर्बल्य में इसका सेवन अतीव लाभकारी है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 तोला (10-20 ग्राम) तक गोदुग्ध या जल के साथ प्रातः व सायं सेवन करें।

दिव्य शिलाजीत सत्

मुख्य द्रव्य स्त्रोत :

यह हिमालय की ऊँची पर्वतमालाओं से स्रवित होने वाला एक दिव्य रस है, जिसमें प्राकृतिक रूप में ही सोना, चाँदी, लोहा आदि सप्त धातुओं का सूक्ष्म मिश्रण होता है।

मुख्य गुण-धर्म :

शिलाजीत की प्रशंसा करते हुए शास्त्रों में लिखा है–

"न सोऽस्ति रोगो भुवि साध्यरूपः शिलाह्वयं यन्न जयेत् प्रसह्य"

अर्थात् इस संसार में रस धातु आदि की विकृति से पैदा हुआ ऐसा कोई भी रोग नहीं है, जो शिलाजीत के सेवन से नष्ट न हो सके।

1. देह को निरोग और सुदृढ़ बनाने के लिए शिलाजीत सर्वोत्तम रसायन है। यह सर्व प्रकार के जीर्ण, दु:खदायी रोग, मेदवृद्धि, मधुमेह व उससे आयी हुई अशक्तता को दूर करके शरीर को शक्तिसम्पन्न व कान्तियुक्त बनाता है।
2. यह गठिया, सर्वाइकल स्पोण्डलाइटिस, सियाटिका, कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कम्पवात, शोथ, जोड़ों का दर्द आदि सभी प्रकार के दर्दों को दूर करता है।
3. सर्दी, कफ, नजला, जुकाम, एलर्जी, श्वास, कास, दमा, फेफड़ों की कमजोरी, टी. बी. (यक्ष्मा), हड्डियों की कमजोरी, शारीरिक दुर्बलता, धातुरोग, यौन शक्ति की कमी, डायबिटीज आदि अनेक रोगों की एक प्रभावशाली औषध है।
4. सभी स्त्री-पुरुष तथा रोग होने पर बच्चे भी इस औषध का सेवन कर सकते हैं। इससे शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति की वृद्धि होती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 बूँद प्रात: सायं दूध के साथ सेवन करें। गर्मी की ऋतु में इसकी मात्रा मूँग के दाने (लगभग 65 मिग्रा) के बराबर लें क्योंकि आश्रम की शिलाजीत पूर्णत: शुद्ध होती है, अत: अत्यधिक प्रभावशाली है। सर्दी के समय एक या दो चने (लगभग 125-150 मिग्रा) के बराबर ले सकते हैं। जो दूध नहीं पीते, वे गुनगुने जल के साथ ही शिलाजीत ले सकते हैं।

संस्थान द्वारा निर्मित मुख्य स्वानुभूत योग

हमने यथासम्भव आयुर्वेद की परम्परागत विधा एवं शास्त्रीय योगों को गुणवत्ता पूर्ण ढंग व शास्त्रीय विधि से निर्माण कर जनमानस के लाभ के लिए प्रचार प्रसार किया। पुनरपि कुछ रोगों में रोगी की स्थिति के अनुसार आशातीत लाभ न होने से वर्षों के अनुभव व सतत अनुसन्धान के परिणामस्वरूप कुछ स्वानुभूत प्रयोगों का निर्माण किया है। जो निम्नलिखित हैं।

दिव्य अर्शकल्प वटी

मुख्य घटक :

शुद्ध रसौत, हरड़ छोटी, बकायन के बीज, नीम के बीज, रीठा छाल, देसी कपूर, कहरवा, खूनखराबा, मकोय, एलुआ, नागदौन आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. खूनी व बादी दोनों तरह की बवासीर को दूर कर उससे उत्पन्न होने वाली असुविधाओं से बचाती है। कुछ दिन लगातार प्रयोग करने से बवासीर, भगन्दर व फिस्च्युला आदि से भी बचा जा सकता है।
2. यह अर्शजन्य शूल, दाह व पीड़ा को भी दूर करती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

छाछ (तक्र) या ताजे पानी के साथ रोग की अवस्थानुसार 1-1 या 2-2 गोली प्रातः खाली पेट व सायं खाने से पहले सेवन करें।

दिव्य आरोग्य वटी

मुख्य घटक :

गिलोय, नीम, तुलसी आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह वटी स्वास्थ्यवर्धक, जीवाणु संक्रमण का निवारण करने वाली, त्वकरोग तथा त्रिदोष विषयमता को दूर करने वाली है।
2. ज्वर, शीत व कफज रोगों में लाभदायक तथा रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली है।

3. विभिन्न रोगों से होने वाले दुष्परिणामों से शरीर का बचाव करती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें।

दिव्य उदरामृत वटी

मुख्य घटक :

पुनर्नवा, भूमि आँवला, मकोय, चित्रक, आँवला, बहेड़ा, निशोथ, कुटकी, आम बीज, बिल्व, अजवायन, अतीस कड़वा, घृतकुमारी, मुक्ताशुक्ति भस्म, कसीस भस्म, लौह भस्म, मण्डूर भस्म आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

इस वटी के सेवन से पेट दर्द, मन्दाग्नि, अतिसार, विबन्ध, अजीर्णता आदि उदर विकारों तथा पीलिया, रक्ताल्पता व जीर्ण ज्वर आदि यकृत् विकारों में विशेष लाभ होता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1-1 या 2-2 गोली सुबह शाम नाश्ते या खाने के बाद गुनगुने पानी या दूध से लें।

दिव्य कायाकल्प वटी

मुख्य घटक :

बावची, पनवाड़, निम्ब, त्रिफला, खदिर, मंजिष्ठा (मंजीठ), कुटकी, अमृता, चिरायता, चन्दन, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, उषब, द्रोणपुष्पी, लघु कंटकारी, कालीजीरी, इन्द्रायण मूल, करंज बीज आदि का घनसत् (एक्सट्रैक्ट) आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. रक्त का शोधन करके सभी प्रकार के चर्म रोगों को दूर करने वाली अचूक औषध है।
2. कील, मुहाँसों को दूर करके चेहरे की झाइयाँ व दाग को भी समाप्त करती है।
3. सभी प्रकार के जीर्ण, पुराने व विकृत दाद, खाज, खुजली, एक्जिमा में तुरन्त लाभ देती है तथा श्वेत कुष्ठ व सोराइसिस में भी पूर्ण लाभप्रद है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली सुबह खाली पेट और शाम को खाने से एक घण्टा पहले ताजे पानी से लें। दूध या दूध से बने पदार्थ इसके सेवन के एक घण्टा पहले व बाद तक सेवन न करें।

दिव्य गिलोयघन वटी

मुख्य घटक :

गिलोयघन सत् इत्यादि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसका प्रयोग ज्वर तथा विभिन्न प्रकार के संक्रमित रोगों में किया जाता है।
2. यह मुख्यरूप से वातरक्त, संधिगतवात एवं मूत्रल विकारों (प्रमेह) में बहुत उपयोगी है।
3. इसे रक्तवह संस्थान तथा स्रोतों की शुद्धि के लिए उत्तम औषध माना गया है।
4. यह तीनों दोषों को साम्य अवस्था में रखती है।
5. इसके अन्दर कोशिकाओं का पुनरुद्भव (Re-Generation) करने की क्षमता पायी गयी है।
6. यह औषधि सामान्य दौर्बल्य ज्वर, डेंगू, चिकन गुनिया, त्वचा एवं मूत्र रोगों में लाभदायक है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें।

दिव्य नीम घनवटी

मुख्य घटक : नीमघनसत् इत्यादि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. नीम घनवटी रक्तशोधक, जीवाणु नाशक तथा त्वचा विकारों में हितकर है।
2. यह शरीर के लिए अमृत तुल्य है।
3. यह रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है।
4. मधुमेह में इसका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी होता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें।

दिव्य पीड़ान्तक वटी

मुख्य घटक :

कुचला, नागरमोथा, रास्ना, निर्गुण्डी, पुनर्नवामूल, मेथी, निशोथ, शतावर, हड़जोड़, हल्दी, शुण्ठी, कुटकी, शुद्ध गुग्गुलु, गोदन्ती भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, योगराज गुग्गुलु,

प्रवाल पिष्टी, गिलोय, मेथी, अश्वगंधा, शिलाजीत सत्, दशमूल इत्यादि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसके सेवन से विभिन्न प्रकार की वातज व्याधियों जानूशूल, मासपेशियों में दर्द, वातरक्त समस्त संधि बन्धनों में पीड़ा इत्यादि विकारों में लाभ होता है।
2. यह ज्वरघ्न, जोड़ों के दर्द में आराम देने वाली एवं शोथहर गुणों से युक्त है।
3. इसके सेवन से सभी प्रकार के जोड़ों के दर्द में लाभ होता है। स्नायु सम्बन्धी शूल तथा शोथ इत्यादि रोगों में लाभ होता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में 2 बार जल के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें।

दिव्य मधुकल्प वटी

मुख्य घटक :

दिव्य मधुनाशिनी वाले द्रव्यों का बिना घनसत् निकाले सूक्ष्म चूर्ण करके मधुकल्प वटी बनाई गई है।

मुख्य गुण-धर्म व सेवन-विधि : मधुनाशिनी की तरह।

दिव्य मधुनाशिनी वटी

मुख्य घटक :

गुडुची, जामुन, कुटकी, निम्ब, चिरायता, गुड़मार, करेला, कुटज, गोक्षुर, कचूर, हल्दी, कालमेघ, बबूल फली, काली जीरी, अतीस कड़वा, अश्वगन्धा, बिल्व, त्रिफला, वट जटा आदि का घनसत् (एक्सट्रैक्ट), शिलाजीत, मेथी आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह अग्नाशय (पेन्क्रियाज़) को क्रियाशील कर अग्नाशय से इन्सुलिन का सही मात्रा में स्राव कराती है तथा उसके माध्यम से अतिरिक्त ग्लूकोस को ग्लाइकोजन में परिवर्तित कराती है।
2. यह कमजोरी व चिड़चिड़ापन दूर करती है तथा मस्तिष्क को ताकत प्रदान कर कार्यक्षमता बढ़ाती है। हाथ-पैरों में आई शून्यता को दूर कर स्नायुतन्त्र को बलिष्ठ बनाती है।
3. यह मधुमेह की वजह से होने वाली थकान, कमजोरी और तनाव जैसी समस्याओं

से निजात दिलाती है।

4. बहुत प्यास लगना, बार-बार मूत्र की इच्छा, वजन घटना, धुंधली दृष्टि, सनसनाहट, थकान, त्वचा, मसूड़ों व मूत्राशय का संक्रमण आदि विकारों से रक्षा करती है।
5. मधुनाशिनी से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

2-2 गोली प्रातः नाश्ते व सायंकाल भोजन से एक घण्टा पहले पानी के साथ लें या प्रातः नाश्ता व रात्रि में भोजन के पश्चात् गुनगुने पानी या दूध के साथ सेवन करें। यदि आप शुगर के लिए इन्सुलिन या एलोपैथिक औषध लेते हैं तो मधुनाशिनी प्रारम्भ करने के दो सप्ताह बाद शुगर परीक्षण कर लें, जैसे-जैसे शुगर का स्तर सामान्य आता जाए वैसे-वैसे अंग्रेजी औषध को धीरे-धीरे कम कर दें। मधुनाशिनी की मात्र भी जैसे-जैसे शुगर कम होती जाए, वैसे-वैसे कम करते जाएँ।

दिव्य मुक्तावटी

मुख्य घटक :

हिमालय की पवित्र जड़ी-बूटियाँ जैसे-ब्राह्मी, शंखपुष्पी, उस्तेखदूस, अर्जुन, पुष्करमूल, जटामांसी, सर्पगन्धा, ज्योतिष्मती, वचा, अश्वगन्धा आदि वनौषधियों एवं मोतीपिष्टी आदि सौम्य द्रव्यों से निर्मित दिव्य औषध है।

मुख्य गुण-धर्म :

1. मुक्तावटी पूर्णरूप से दुष्प्रभावरहित है।
2. उच्च रक्तचाप चाहे गुर्दों के विकार या हृदयरोग के कारण से हो अथवा कोलेस्ट्रॉल, चिन्ता, तनाव या वंशानुगत आदि किसी भी अन्य कारण से हो तथा बी.पी.के साथ यदि अनिद्रा, घबराहट, छाती व सिर में दर्द भी हो तो मात्र इस एक ही औषध के प्रयोग से इन सब समस्याओं से छुटकारा मिल जाता है।
3. यदि उच्च रक्तचाप के कारण अनिद्रा, बेचैनी हो तो उसके लिए अलग से औषधि लेने की आवश्यकता नहीं है। जिन्हें नींद पूरी आती हो, उनकी नींद नहीं बढ़ेगी।
4. किसी भी प्रकार की कोई भी एलोपैथिक आदि अन्य औषध सेवन कर रहे हों तो 'मुक्तावटी' सेवन प्रारम्भ करने के बाद उसे आप तुरन्त बन्द कर सकते हैं। यदि आप बहुत लम्बे समय से अन्य औषध सेवन कर रहे हों या भयग्रस्त हों तो दूसरी औषध की मात्रा धीरे-धीरे कम करते हुए बन्द कर दें।
5. यदि किसी एलोपैथिक आदि औषध को लेने पर भी आपका रक्तचाप सामान्य न हो

पाता हो तथा साथ ही नींद न आना या घबराहट रहती हो तो भी मुक्तावटी से तुरन्त लाभ मिलेगा।

6. एलोपैथिक औषध आपको रक्तचाप से केवल राहत दिला सकती हैं; रोग को समूल नष्ट नहीं कर सकती। जबकि 'मुक्तावटी' लगभग एक-डेढ़ वर्ष में ही उच्च रक्त-चाप को सदा के लिए सामान्य कर देती है एवं सभी औषधियाँ छूट जाती हैं। यदि अपवाद स्वरूप किसी को हमारी औषध लम्बे समय तक भी खानी पड़े तो इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

सेवन-विधि व मात्रा :

एलोपैथिक औषध लेते हुए भी रक्तचाप 160-100 या इससे अधिक होने पर दो-दो गोली सुबह नाश्ते से पहले दोपहर को भोजन से पहले और शाम को खाने से एक घण्टा पहले दिन में तीन बार ताजे पानी से लें। गोली चबा कर ऊपर से पानी पीना अधिक लाभप्रद है। जब रक्तचाप सामान्य होने लगे तो धीरे-धीरे एलोपैथिक औषध को बन्द करके मुक्तावटी की दो-दो गोली दो बार लेते रहें। यदि एलोपैथिक औषधि का सेवन करते हुए रक्तचाप 140-90 रहता हो तब मुक्तावटी की दो-दो गोली सुबह-शाम प्रारम्भ कर दें। रक्तचाप सामान्य होने पर एलोपैथिक औषध बन्द कर दें।

विशेष :

यदि आप बी.पी. के लिए एलोपैथिक औषध को ले रहे हों तो आप मुक्तावटी प्रारम्भ करने के बाद बी.पी. मापते रहें, जब बिना अंग्रेजी औषध के ही बी.पी. सामान्य हो जाय तो अंग्रेजी औषध को बन्द कर दें। यदि आप लम्बे समय से अंग्रेजी औषध को ले रहे हों तो उसकी मात्रा धीरे-धीरे कम करते हुए बन्द कर दें। मुक्तावटी भी दो-दो गोली कुछ समय खाने के बाद लेते रहें। रक्तचाप जब सामान्य रहने लगे तो मुक्तावटी पहले दो-दो, फिर एक-एक गोली कुछ समय लेने के बाद, केवल सुबह एक गोली खाने मात्र से बी.पी. नियन्त्रित रहने लगेगा। कुछ समय के बाद एक गोली खाने से भी जब बी.पी. 120-80 से भी कम होने लगे तब सप्ताह में दो बार एक-एक गोली लें। फिर सात दिन में, और फिर इस मुक्तावटी को बन्द कर देंगे, तब भी आपका बी.पी. बढ़ेगा नहीं अर्थात् आप पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगे।

पथ्य-अपथ्य (खान-पान) :

हल्का व सुपाच्य भोजन लें। प्रातः काल उठकर दो से चार गिलास पानी पिएं। नमक कम मात्र में लें।

दिव्य मेधावटी

मुख्य घटक :

ब्राह्मी, शंखपुष्पी, वचा, ज्योतिष्मती, अश्वगन्धा, जटामांसी, उस्तोखद्दूस, पुष्करमूल आदि का घनसत् (एक्सट्रेक्ट) तथा प्रवाल पिष्टी, मोती पिष्टी, व चाँदी भस्म आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह वटी स्मरणशक्ति की कमजोरी, सिर दर्द, निद्राल्पता, स्वभाव का चिड़चिड़ापन, दौरे (एपिलेप्सी) आदि में लाभप्रद है।
2. स्वप्न अधिक आना व निरन्तर नकारात्मक विचारों के कारण अवसाद (डिप्रेशन), घबराहट आदि इसके सेवन से दूर होता है तथा आत्मविश्वास व उत्साह बढ़ता है।
3. विद्यार्थियों तथा मानसिक कार्य करने वालों के लिए यह अत्यन्त हितकारी, प्रतिदिन सेवन करने योग्य, बुद्धि व स्मृतिवर्धक उत्तम टॉनिक है।
4. वृद्धावस्था में स्मृतिभ्रंश होना अर्थात् स्मरण शक्ति का अभाव व किसी भी पदार्थ आदि को सहसा ही भूल जाना आदि में भी यह एक सफल व निरापद औषध है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली सुबह खाली पेट दूध से या नाश्ते के बाद पानी से और सायंकाल खाना खाने के बाद पानी या दूध से सेवन करें।

दिव्य मेदोहर वटी

मुख्य घटक :

शुद्ध गुग्गुलु, शिलाजीत सत् तथा हरड़, बहेड़ा, आँवला, कुटकी, पुनर्नवामूल, निशोथ, वायविडंग आदि का घनसत्।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह पाचन तन्त्र में आई विकृति को दूर कर शरीर के अतिरिक्त बढ़े हुए मेद (फैट) को कम करके शरीर को सुन्दर, सुडौल, कान्तिमय व स्फूर्तिमय बनाती है।
2. यह थायरायड की विकृति, सन्धिवात, जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, घुटनों के दर्द में भी विशेष लाभप्रद है।
3. यह शरीर के मेद का पाचन करके हड्डी, मज्जा व शुक्रादि धातुओं को पुष्ट करती है अर्थात् मेद को रूपान्तरित करके शरीर को गठीला बनाती है। इसके सेवन से शरीर पर कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता।

सेवन-विधि व मात्रा :

1-1 या 2-2 गोली शरीर के वजन के अनुसार दिन में दो या तीन बार खाने से आधा घण्टा पहले या भोजन के एक घण्टे बाद गुनगुने पानी से सेवन करें। मीठा व घी बन्द करके सुबह उठकर तथा दिन में भी गुनगुने पानी का अधिक मात्रा में उपयोग करें। तली हुई व मैदे की चीजें तथा मेद को बढ़ाने वाले पदार्थों का सेवन न करें।

दिव्य यौवनामृत वटी

मुख्य घटक :

जावित्री, जायफल, केशर, सफेद मूसली, स्वर्ण भस्म, कौंच के बीज, अकरकरा, बलाबीज, शतावर, मकरध्वज आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. ढलती आयु या थके कमजोर शरीर वालों के लिए यह अत्यन्त बलवर्धक और पुष्टिकारक है।
2. यह वटी दिल और दिमाग को शक्ति देने वाली, शुक्राणु अल्पता तथा शरीर में स्फूर्ति बढ़ाने वाली और वाजीकारक है।
3. नशीली वस्तु का सेवन किए बिना शुक्राणुवर्धक, अत्यन्त बलवर्धक, पुष्टिकारक, वाजीकरण, ओज, तेज, कान्तिवर्धक, नपुंसकता नाशक व शक्ति देने वाली सर्वोत्तम औषध है।

सेवन-विधि तथा मात्रा :

1 या 2 गोली प्रातः नाश्ते व सायं खाने के बाद दूध के साथ सेवन करें।

दिव्य वृक्कदोषहर वटी

मुख्य घटक :

ढाकफूल, पित्तपापड़ा, पुनर्नवामूल, पाषाण भेद, वरुण छाल, कुलथी, अपामार्ग, कासनी, पीपल छाल, नीम छाल, मकोयदाना, गोखरू दाना, अमलतास गूदा, बलामूल आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसका सेवन वृक्कदोष, शोथ, मूत्राश्मरी आदि में लाभदायक होता है।
2. वृक्क निष्क्रियता (Chronic Renal failure) में इसका सेवन करने से विशेष लाभ मिलता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

आवश्यकतानुसार एक से दो गोली दिन में दो बार वृक्कदोषहर क्वाथ से लेने से विशेष लाभ मिलता है।

नोट : इसका सेवन चिकित्सक के परामर्शानुसार करना उचित रहेगा।

दिव्य शिलाजीत रसायन वटी

मुख्य घटक :

शिलाजीत, अश्वगन्धा, भूमि आँवला, त्रिफला आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इस वटी का प्रभाव वातवाहिनी नाड़ी तथा वृक्क (मूत्र-पिण्ड) एवं वीर्यवाहिनी शिराओं पर विशेष होता है।
2. यह वातशामक, बलवर्धक, वीर्यवर्धक है। इसके सेवन से स्वप्नदोष, प्रमेह, श्वेतप्रदर आदि में विशेष लाभ होता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

2-2 गोली दूध अथवा गुनगुने जल के साथ भोजनोपरान्त लें।

दिव्य स्त्रीरसायन वटी

मुख्य घटक :

पुत्रजीवक, श्वेत चन्दन, कमल, दारुहल्दी, वंशलोचन, प्रवाल पिष्टी, शिलाजीत, शतावर, शिवलिंगी बीज, पारस पीपल, मुलैठी, त्रिफला, अम्बरधान, बीजबन्द (बला बीज), आँवला, अशोक, नागकेशर, अश्वगंधा, देवदारु, शुद्ध गुग्गुलु आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. सम्पूर्ण स्त्री रोगों जैसे श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, मासिकधर्म की अनियमितता या कटि-पेडू की पीड़ा आदि में विशेष लाभप्रद है।
2. अतिमासिकस्राव में विशेष उपयोगी है। कुछ समय सेवन करने से समस्त स्त्री रोग दूर हो जाते हैं।
3. चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ना, आँखों के नीचे कालिमा, हर समय शरीर में थकान व आलस्य जैसे विकारों को दूर करने में स्त्री रसायन वटी अत्यधिक सहायक है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 गोली दिन में दो से तीन बार खाने के बाद दूध या पानी से लें।

दिव्य हृदयामृत वटी

मुख्य घटक :

अर्जुन छाल, अमृता, अश्वगन्धा, रास्ना, निर्गुण्डी, पुनर्नवा, चित्रक, नागरमोथा आदि का घनसत् (एक्सट्रैक्ट), हीरक भस्म, अकीक पिष्टी, संगेयशब पिष्टी, मोती पिष्टी,

चाँदी भस्म, शिलाजीत सत् व शुद्ध गुग्गुलु आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसके सेवन से हृदय को ताकत मिलती है। इससे हृदय की धमनियों के अवरोध (ब्लॉकेज) दूर होते हैं। बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल का नियमन होता है।
2. बार-बार उठने वाले हृदय शूल (एञ्जाइना) में भी यह तुरन्त प्रभावकारी है।
3. हृदय की कोशिकाओं को क्रियाशील बना देती है। बेचैनी, घबराहट को दूर कर हृदय की कार्यक्षमता बढ़ाती है।
4. यह हृदय के अन्दर आई हुई अवरुद्धता (ब्लॉकेज) को दूर करके हृदय को स्वस्थ रखने में अत्यन्त सहयोगी है।
5. यदि आप हृदय का ऑपरेशन करा चुके हैं तो भी हृदय को स्वस्थ बनाए रखने के लिए आप दिव्य हृदयामृत वटी का सेवन कर सकते हैं।

मात्रा व अनुपान :

1 से 2 गोली प्रातः व सायं दूध या गुनगुने पानी अथवा अर्जुन छाल के क्वाथ के साथ लें। अर्जुन छाल 2 से 3 ग्राम लेकर उसको एक कप दूध व एक कप पानी में पकाएं और जब एक कप शेष रह जाय तब छानकर पीना या अर्जुन क्वाथ (काढ़ा) पानी में पकाकर पिया जा सकता है। यदि आप हृदय के लिए एलोपैथिक औषध प्रयोग कर रहे हैं तो जैसे-जैसे हृदयामृत के सेवन से आपका हृदय स्वस्थ होता जाए वैसे-वैसे अंग्रेजी औषधियों को डॉक्टर के परामर्श से कम कर दें।

दिव्य अश्वगंधा कैप्सूल

मुख्य घटक :

अश्वगंधा घनसत् इत्यादि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसके सेवन से शारीरिक दुर्बलता, मानसिक तनाव, अनिद्रा आदि रोगो में लाभ होता है।
2. यह मस्तिष्क तथा हृदय को बल प्रदान करता है।
3. यह स्नायु दौर्बल्य तथा वात विकारों को दूर करने वाली श्रेष्ठ औषधि है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 कैप्सूल प्रतिदिन सुबह-शाम नाश्ते या खाने के बाद दूध या जल के साथ सेवन करें।

दिव्य अश्वशिला कैप्सूल

मुख्य घटक :

अश्वगंधा घनसत्, शिलाजीत सत् इत्यादि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह थकान, तनाव, यौन दौर्बल्य, अस्थमा, जोड़ों का दर्द, मधुमेह जन्य दौर्बल्य, धातु रोग, मूत्र-विकार तथा शारीरिक दौर्बल्य में लाभप्रद है।
2. यह यौन विकारों को दूर करने की निरापद व प्रभावशाली औषधि है।
3. इसमें उपस्थित अश्वगन्धा तनाव व थकान को दूर करता है तथा शिलाजीत शुक्रधातु का पोषण कर मधुमेह तथा यौन दौर्बल्य को दूर कर जीवनीय शक्ति का संचार करता है।
4. यह रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 कैप्सूल दिन में 2 बार दूध के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें।

दिव्य शिलाजीत कैप्सूल

मुख्य घटक :

शिलाजीत सत् इत्यादि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसका सेवन क्लैब्य (नपुंसकता), स्नायु विकारों एवं रक्तमेह (यदि शुगर का स्तर बढ़ा हो तो) में अति लाभकारी होता है।
2. यह मूत्र-विकारों में लाभकारी है।
3. जिनको उच्च रक्तचाप की समस्या हो तो उन्हे इसे कम मात्रा में या चिकित्सक के परामर्शानुसार सेवन करना चाहिए।
4. यह मासपेशियों को ताकत प्रदान करता है।
5. यह यौन-दुर्बलता, वातज-विकारों, कफज- विकारों, धातु रोगों तथा मूत्र-विकारों में लाभप्रद व जीवनीय-शक्ति को बढ़ाने वाला है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 कैप्सूल दिन में 2 बार दूध के साथ भोजन के उपरान्त सेवन करें।

दिव्य अश्मरीहर क्वाथ

मुख्य घटक :

पाषाणभेद, वरुण, पुनर्नवा, गोक्षुर।

मुख्य गुण-धर्म :

दिव्य अश्मरीहर क्वाथ आयुर्वेद में वर्णित मूत्रल एवं अश्मरी भेदन वनस्पतियों से निर्मित है। इसका सेवन मुख्य रूप से वृक्काश्मरी में अति लाभदायक है। अश्मरीहर क्वाथ का प्रयोग पित्ताश्मरी में भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त समस्त मूत्र-विकारों जैसे मूत्रकृच्छ्र, मूत्रदाह आदि में भी इसका सेवन लाभकारी है।

सेवन-विधि व मात्रा :

एक चम्मच या 5 ग्राम क्वाथ को लेकर 400 मिली पानी में पकाएं। जब एक चौथाई शेष रह जाय तब छानकर ठण्डा करके प्रातः सायं खाली पेट लें।

दिव्य कायाकल्प क्वाथ

मुख्य घटक :

बावची बीज, पनवाड़, हल्दी, दारुहल्दी, खैर छाल, करंज बीज, नीम छाल, मंजीठ, गिलोय, चिरायता, कुटकी, चन्दन, देवदारु, उषब, द्रोणपुष्पी आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इस क्वाथ का सेवन करने से सभी सब प्रकार के चर्मरोग, एग्ज़िमा, कुष्ठ रोग, श्लीपद आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी है।
2. इससे पेट भी साफ होता है। मोटापा कम करने में भी यह सहयोग करता है।
3. चर्मरोग के लिए कायाकल्प वटी और मोटापे के लिए मेदोहर वटी के साथ इसका सेवन करें।

सेवन-विधि :

5 से 10 ग्राम क्वाथ को लगभग 400 मिली पानी में पकाकर जब लगभग 100 मिली शेष रह जाय तब छानकर सुबह खाली पेट व रात्रि को भोजन से लगभग 1 घण्टा पहले पिएं। इसका स्वाद कड़वा है। यदि आपको मधुमेह नहीं है तो शहद या मिश्री मिलाकर भी पी सकते हैं। यदि काढ़ा अधिक मात्रा में न पीया जाय, तो ज्यादा उबालें और कम जल शेष रहने पर छानकर पीयें।

नोट : क्वाथ को पकाने से पहले लगभग 8-10 घण्टे भिगोकर रखना अधिक गुणकारी होता है।

दिव्य पीड़ान्तक क्वाथ

मुख्य घटक :

पिप्पली मूल, निर्गुण्डी, अश्वगन्धा, रास्ना, नागरमोथा, एरण्डमूल, सोंठ, अजवायन, नागकेशर, गजपीपल, पारिजात आदि वातशामक औषधियाँ।

मुख्य गुण-धर्म :

जोड़ों का दर्द, गृध्रसी (सियाटिका), गठिया आदि सभी प्रकार की वेदनाओं व शोथ में लाभप्रद है।

प्रयोग-विधि एवं मात्रा :

5 से 10 ग्राम क्वाथ को लगभग 400 मिली पानी में पकाएँ। जब लगभग 100 मिली शेष रह जाय तब छानकर सुबह खाली पेट व रात को सोते समय पिएं। विशेष लाभ के लिए किसी भी वातशामक औषध को काढ़े के साथ सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है। अतिशोथ व पीड़ा के लिए क्वाथ स्नान व सिकाई से भी विशेष लाभ होता है।

क्वाथ स्नान-विधि :

1. रोगानुसार दिये गये क्वाथ से यदि वाष्प (भाप) लेनी हो तो निर्दिष्ट औषध को 1-1.5 लीटर पानी में प्रेशर कुकर में डालकर पकाएँ। जब सीटी से वाष्प निकलने लगे, तब सीटी को हटाकर उसके स्थान पर गैस वाला रबड़ का पाइप लगा दें तथा पाइप के दूसरे सिरे से निकलती हुई वाष्प से रोगयुक्त स्थान पर वाष्प दें। पाईप के जिस सिरे से वाष्प निकलती है वहाँ कपड़ा लगाकर रखें, अन्यथा गुनगुने जल के छींटे शरीर को जला सकते हैं। उचित समय तक वाष्प लेने के बाद शेष बचे गुनगुने जल से पीड़ायुक्त स्थान पर सिकाई करें।
2. यदि वाष्प न लेना हो तो औषध को आवश्यकतानुसार 3-4 लीटर पानी में पकाएँ। जब उबलते हुए लगभग आधा पानी शेष रह जाए तो गुनगुने जल को कपड़े आदि के माध्यम से लेकर रोगयुक्त स्थान की सिकाई करें।

दिव्य मेधा क्वाथ

मुख्य घटक :

ब्राह्मी, शंखपुष्पी, अश्वगन्धा, जटामांसी, उस्तेखद्दूस, मालकांगनी, सौंफ, गाजवा (गोजिह्वा) आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

जीर्ण शिरःशूल, माइग्रेन (अर्धावभेदक), निद्राल्पता, अवसाद (डिप्रेशन) में अत्यन्त लाभप्रद है। इसके सेवन से घबराहट दूर होती है तथा यह स्मृतिवर्धक है।

सेवन-विधि व मात्रा :

इसका काढ़ा बनाकर सुबह व शाम पिएं। साथ में मेधावटी का सेवन करने से शीघ्र लाभ मिलता है।

दिव्य वृक्कदोषहर क्वाथ

मुख्य घटक :

पाषाणभेद, गोखरू, पुनर्नवामूल, कुलथी, वरुणछाल आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसका सेवन हमारे उत्सर्जन तन्त्र को विशेष रूप से प्रभावित करता है। यह मूत्रल, शीतल व शोथहर है।
2. इसके सेवन से गुर्दे की पथरी तथा मूत्राशय की पथरी टूट-टूटकर निकल जाती है। जिनको बार-बार पथरी बनने की शिकायत हो, इसका सेवन करने पर निश्चित रूप से पथरी बननी बन्द हो जाती है। इससे गुर्दे के अन्दर का इन्फैक्शन व अन्य विकार दूर होते हैं। पित्ताशय की पथरी में भी यह लाभप्रद है।

सेवन-विधि व मात्रा :

दो चम्मच (लगभग 10 ग्राम) की मात्रा में क्वाथ लेकर उसे डेढ़ गिलास (आधा लीटर) पानी में पकाएँ तथा 1/4 भाग शेष बचने पर छानकर सुबह खाली पेट तथा दोपहर के भोजन के 5-6 घण्टे बाद खाली पेट लें। इसके साथ अश्मरीहर रस के सेवन से विशेष लाभ होगा।

दिव्य सर्वकल्प क्वाथ

मुख्य घटक :

पुनर्नवा, भूमि आँवला, अमलतास, मकोय आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इस क्वाथ के सेवन का प्रभाव हमारे यकृत् को सबल बनाता है। जिससे यकृत् अपना कार्य सुचारु रूप से करने लगता है।
2. आजकल के दूषित खाने तथा दूषित पेयों (कोल्ड ड्रिंक्स, चाय, कॉफी) आदि के माध्यम से शरीर के अन्दर ज़हरीले रसायन एकत्र होकर यकृत् की क्रियाशीलता को

कम या नष्ट कर देते हैं। फलतः शरीर बीमारियों का घर हो जाता है और पीलिया उसकी अत्यन्त जटिल स्थिति Hepatitis B तथा C जैसी असाध्य अवस्था में पहुँच जाता है। सर्वकल्प क्वाथ यकृत् से सम्बन्धित उपरोक्त Hepatitis B तथा C जैसी जीर्ण अवस्थाओं से बचाकर यकृत् को क्रियाशील बनाता है।

3. इसके सेवन से पीलिया (पाण्डु), यकृत् की वृद्धि, सूजन, मूत्राल्पता, सर्वाङ्ग-शोथ तथा पेट व पेड़ू में दर्द होना, भोजन का पाचन न होना, भूख न लगना आदि समस्त विकार दूर होते हैं।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 चम्मच (लगभग 5 ग्राम) क्वाथ को एक गिलास पानी (लगभग 300 मिली) में पकाकर 100 मिली जल बचने पर छानकर खाली पेट पिएं। इसी प्रकार सायंकाल खाने से एक घण्टा पहले या रात्रि को सोते समय लें। यदि पेट साफ नहीं होता हो तो पकाते समय उसमें 8-10 मुनक्का भी डाल लें।

दिव्य कायाकल्प तैल

मुख्य घटक :

बावची बीज, पनवाड़ बीज, दारुहल्दी, हल्दी, करंज बीज, निम्ब छाल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, मंजिष्ठा, अमृता, चिरायता, कुटकी, श्वेत चन्दन, देवदारु, काली जीरी, द्रोणपुष्पी, कंटकारी, उषब, रीठा, गोमूत्र, तिल तैल आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह तैल दाद, खाज, खुजली, चमला (एग्ज़ीमा), श्वेत कुष्ठ, सोराइसिस, शीतपित्त, चकत्ते, स्किन एलर्जी, सन बर्निंग आदि समस्त चर्मरोगों में तुरन्त लाभ देता है।
2. हाथ पैरों का फटना, जलने, कटने व घाव आदि पर भी लगाने से सद्यः प्रभावकारी, यह कायाकल्प तैल प्रत्येक घर में सदैव रखने योग्य दिव्य औषध है।

उपयोग-विधि :

रोगग्रस्त स्थान पर दिन में 2-3 बार लगाएँ।

दिव्य केश तैल

मुख्य घटक :

भृंगराज, ब्राह्मी, आँवला, श्वेत चन्दन, दारुहल्दी, कमल, अनन्तमूल, केतकी, जटामाँसी, नील, रतनजोत, श्वेत रत्ती, प्रियंगु, लोध्र, नागकेशर, नागरमोथा, बला, तिल तैल आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह बालों के लिए अमृत समान है। यह तेल असमय बालों का सफेद होना, झड़ना, रूसी, गंजापन आदि को रोकता है। इसको लगाने से बाल स्वस्थ व घने होते हैं।
2. अनेक दिव्य जड़ी-बूटियों के मिश्रण से बना हुआ यह तैल आँखों को शक्ति तथा दिमाग को शीतलता व ताकत देता है। सिर दर्द व सब प्रकार के शिरो विकारों में लाभ प्रदान करता है।

उपयोग-विधि :

इस तेल को बालों की जड़ों में लगाकर अच्छी तरह मालिश करें।

दिव्य पीड़ान्तक तैल

मुख्य घटक :

वत्सनाभ, मधुयष्टि, पिप्पलीमूल, सैंधा नमक, वच, गजपीपल, जटामांसी, नागकेशर, हल्दी, दारुहल्दी, तेजपात, भृंगराज, मंजीठ, पलाशमूल, पुष्करमूल, सुगंधबाला, शतावर, सोंठ, सोयाबीन, चित्रकमूल, सौंफ, एरण्डमूल, अर्कमूल, धतूरा, अजवायन, कुपीलु, मालकांगनी, गन्धप्रसारणी, रास्ना, निर्गुण्डी, लहसुन, गोदुग्ध, दही, गोमूत्र, दशमूल, जीवक, मेदा, वृद्धि, काकोली, क्षीर काकोली, तिल तैल आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, घुटनों का दर्द, सर्वाइकल स्पोंडलाइटिस, स्लिपडिस्क आदि सभी प्रकार की वेदना, शोथ व पीड़ा में लाभप्रद है।

उपयोग विधि :

पीड़ायुक्त स्थान पर धीरे-धीरे मालिश करें। यह तैल केवल बाह्य प्रयोगार्थ ही **(For External Use Only)** है। मालिश सदा ही हृदय की ओर उचित बल का प्रयोग करते हुए धीरे-धीरे करनी चाहिए।

दिव्य उदरकल्प चूर्ण

मुख्य घटक :

मुलेठी, सौंफ, सनाय, रेवंदचीनी, गुलाब फूल, छोटी हरड़, मिश्री आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

यह पित्तशामक, मृदु विरेचक और सौम्य औषध है। इस चूर्ण के सेवन से पेट साफ होकर कब्ज दूर होता है। इसके सेवन से आँतों में किसी प्रकार की जलन या विकार उत्पन्न नहीं होते। यह जठराग्नि को प्रदीप्त कर आँव का पाचन करता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

2 से 4 ग्राम तक रात्रि को सोते समय गुनगुने जल या गुनगुने दूध के साथ लें। इसमें मिश्री है। अत: मधुमेह के रोगी सेवन न करें। यह मृदु होने से बच्चों के लिए भी हानिरहित विरेचक है।

दिव्य गैसहर चूर्ण

मुख्य घटक :

अजवायन, काली मिर्च, नींबू सत्, जीरा, काला नमक, छोटी हरड़, शुद्ध हींग आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इस चूर्ण के सेवन से भोजन का पाचन होता है तथा अम्लपित्त आदि रोगों में लाभ होता है।
2. भोजन के पश्चात् पेट भारी होना, अफारा होना, दर्द, भोजन में अरुचि आदि रोगों में तुरन्त लाभ प्रदान करता है।

सेवन-विधि तथा मात्रा :

भोजनोपरान्त आधा चम्मच गुनगुने जल से सेवन करें। पेट में दर्द, अफारा, बेचैनी आदि की अवस्था में किसी भी समय आधा चम्मच गुनगुने पानी से लें।

दिव्य चूर्ण

मुख्य घटक :

गुलाब फूल, सोंठ, सैंधा नमक, सनाय पत्ती, छोटी हरड़, कालादाना, सौंफ आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह चूर्ण कब्ज को दूर करता है तथा आँतों में जमे मल को साफ कर बाहर निकालता है। आँतों को क्रियाशील बनाता है, जिससे आँतों के अन्दर की परत पर मल को पुन: जमने नहीं देती।
2. यह चूर्ण उदरशूल, आध्मान, अरुचि आदि विकारों में लाभप्रद है।

सेवन-विधि तथा मात्रा :

1 चम्मच या आवश्यकतानुसार रात को सोते समय गुनगुने पानी से लें।

दिव्य वातारि चूर्ण

मुख्य घटक :

सोंठ, अश्वगन्धा, सुरंजान मीठी, कुटकी, मेथी आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इस चूर्ण के सेवन से सब प्रकार के वातरोग, आमवात, संधिशूल, सर्वाङ्ग वेदना आदि विकारों में लाभ होता है।
2. यह शूलनाशक तथा प्रकुपित वायु का शमन कर आमवात, गृध्रसी, पीठ व कमर दर्द आदि को दूर करता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

2 से 4 ग्राम तक गुनगुने जल या दूध के साथ दोपहर-सायं के भोजन के बाद दो बार सेवन करें।

दिव्य अश्मरीहर रस

मुख्य घटक :

यवक्षार, मूलीक्षार, श्वेत पर्पटी, हजरलयहूद आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह रस (पाउडर) मूत्रल है। इसके सेवन से जमा हुआ कैल्शियम घुलकर शरीर के बाहर निकल आता है, जिससे उसके कारण उत्पन्न वेदनाओं से मुक्ति मिलती है। यह गुर्दे की शोथ व पीड़ा को भी दूर करता है। जिनको बार-बार पथरी बनने की शिकायत होती है, कुछ समय तक इसके सेवन से हमेशा के लिए पथरी बननी बन्द हो जाती है।
2. इस औषध के सेवन से मूत्रदाह का शमन होता है तथा शरीर में एकत्र विजातीय तत्व (टॉक्सिन्स) शरीर से बाहर निकल जाते हैं।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 ग्राम अश्मरीहर रस सुबह खाली पेट तथा दोपहर खाने के 5-6 घण्टे बाद अश्मरीहर क्वाथ से लें। इस अश्मरीहर रस को काढ़े के बिना भी सामान्य जल के साथ लिया जा सकता है।

दिव्य पीड़ान्तक रस

मुख्य घटक :

अजवायन, निर्गुण्डी, सुरंजान मीठी, अश्वगन्धा, रास्ना, मोथा, महावातविध्वंसन रस, प्रवाल पिष्टी, शिलाजीत, मोती पिष्टी, शुद्ध कुपीलु, हीरक भस्म, दशमूल, गिलोय, योगराज गुग्गुलु, मण्डूर भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

जोडों का दर्द, गठिया, कमर दर्द, सर्वाइकल स्पोण्डिलाइटिस, सियाटिका आदि में अत्यन्त लाभप्रद है। यह समस्त शारीरिक पीड़ाओं में शीघ्र तथा स्थाई लाभ देता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1-1 या 2-2 गोली दो बार दूध या गुनगुने जल के साथ भोजनोपरान्त लें।

दिव्य श्वासारि रस

मुख्य घटक :

प्रवाल पिष्टी, अभ्रक भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, टंकण भस्म, स्फटिका भस्म, गोदन्ती भस्म, कपर्दक भस्म, अकरकरा मूल, लवंग, दालचीनी, त्रिकटु चूर्ण, काकड़ा सिंगी, मधुयष्टि, रुदन्ती फल आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. श्वासारि रस का सेवन करने से फेफड़ों के ऊतकों में अधिक क्रियाशीलता आती है। श्वसननलिका-शोथ तथा फुफ्फुस-शोथ दूर होता है, जिससे अधिक मात्रा में ऑक्सीजन फेफड़ों को मिलती है और ब्रोन्काइटिस जैसी समस्याओं से छुटकारा मिलता है।
2. इसके सेवन से फेफड़ों में जमा हुआ कफ सरलता से बाहर निकल जाता है।
3. इसके सेवन से फेफड़ों की रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है तथा कफ, नजला, जुकाम, दमा, बार-बार छींकें आना, सिर में भारीपन, साइनस आदि रोगों में विशेष लाभ होता है। यह फेफड़ों को पोषण देने वाला एक उत्तम टॉनिक है।

सेवन-विधि व मात्रा :

500 मिग्रा से 1 ग्राम तक दिन में 2 या तीन बार भोजन से पहले शहद से या गुनगुने पानी से लें। इसको भोजन के बाद भी लिया जा सकता है। यदि श्वास की तीव्रता अधिक हो तो 50 ग्राम श्वासारि रस में अभ्रक भस्म 10 ग्राम, प्रवालपिष्टी 10 ग्राम मिलाकर सबकी 60 पुड़िया बनाकर 1-1 पुड़िया दिन में 2 या 3 बार शहद के साथ सेवन करें।

आँवला रस

बालों का असमय सफेद होना, ग्रोथ कम होना, झड़ना व गंजापन आदि समस्त केश रोगों के लिए साथ ही आँखों का चश्मा हटाने व समस्त नेत्र रोगों के लिए यह रस सर्वोत्तम

है। इसके नित्य प्रयोग से पाचनतन्त्र, श्वसनतन्त्र, उत्सर्जनतन्त्र एवं प्रजननतन्त्र संतुलित एवं स्वस्थ होता है। वयावस्था-जन्य विकारों से शरीर की रक्षा करता है। आँवला रस उत्तम रसायन तथा वृष्य (वीर्यवर्धक) है। इसका प्रयोग स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य को बनाये रखने तथा रोगी के रोग के निवारण हेतु किया जाता है। आयुर्वेद में आँवला फल को अमृत तुल्य कहा गया है। आँवला रस वय:स्थापक है। अत: मानव शरीर को रोगों से मुक्त रखता है। आँवला शीतवीर्य होने से पित्त के विकारों में शीघ्र ही लाभ पहुँचाता है। यह तीनों (वात, पित्त, कफ) दोषों को सम करके रोगों का निवारण करता है। इसके लागातार सेवन करते रहने से चेहरे की कान्ति तथा वर्ण की वृद्धि होती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

प्रात: उठते ही 25 से 50 मिली रस गुनगुने या सामान्य जल में मिलाकर सेवन करें। आँवला या एलोवेरा रस का एक साथ मिलाकर सेवन करने से गैस आदि रोगों में विशेष लाभ होता है। आँवला रस शाम खाने के बाद भी सेवन कर सकते हैं।

घृतकुमारी रस (एलोवेरा जूस)

पाचन तन्त्र को सदा स्वस्थ रखने, गैस, कब्ज, एसिडिटी, जोड़ों का दर्द, कैंसर, कोलाइटिस, यौनरोग, धातुरोग, श्वेतप्रदर व रक्तप्रदर आदि समस्त स्त्री रोगों के लिए यह अत्यन्त लाभकारी है। एलोवेरा एवं आँवला का स्वरस यदि प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में खाली पेट व सायंकाल खाने के बाद पिया जाय तो व्यक्ति लम्बे समय तक निरोगी जीवन जी सकता है।

सेवन-विधि व मात्रा :

सुबह 25 से 50 मिली एलोवेरा स्वरस को पीकर ऊपर से गुनगुना पानी पी लें। शाम को भी खाने के बाद जल में मिलाकर सेवन कर सकते हैं। घृतकुमारी रस को आँवला रस व ज्वारे के रस के साथ भी लिया जा सकता है।

दिव्य कान्तिलेप

मुख्य घटक :

मेंहदी बीज (पत्र), आमाहल्दी, हल्दी, मंजीठ, जायफल, सफेद चन्दन, सुगन्धबाला, स्फटिकभस्म, समुद्रफेन, कत्था, कपूर आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह लेप त्वचा पर आई हुई सभी समस्याओं जैसे–कील-मुँहासे, चेहरे पर झुर्रियों का पड़ना, निस्तेजता, कान्तिहीनता, कालापन आदि विकारों में शीघ्र लाभकारी है।

2. इसका चेहरे पर निरन्तर लेप करने पर यह लेप त्वचागत सभी विकारों को अवशोषित कर लेता है, जिससे रोगग्रस्त त्वचा पुनः स्वस्थ हो जाती है, चेहरे का प्राकृतिक सौन्दर्य फिर से निखरता है और मुख पर ओज, तेज व कान्ति आती है।

सेवन-विधि व मात्रा :

लगभग एक चम्मच पाउडर लेकर पानी, गुलाब जल या कच्चा दूध मिलाकर लेप (पेस्ट) बना लें। इस लेप को चेहरे पर 3-4 घण्टे तक लगा रहने दें, बाद में गुनगुने पानी से धो लें।

दिव्य अमृत रसायन (अवलेह)

मुख्य घटक :

आँवला पिष्टी, गोघृत, केशर, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, बादाम, वंशलोचन, एला, दालचीनी, शतावर, कौंच बीज, प्रवाल पिष्टी आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह मस्तिष्क को पूर्ण पोषण देने वाला अत्यन्त लाभप्रद रसायन है। यह मेधावर्धक (बुद्धिवर्धक), शीतल, शरीर के सम्पूर्ण अंगों को शक्ति, पुष्टि व आरोग्य प्रदान करता है।
2. शरीर को पुष्ट करके बल, कान्ति को बढ़ाने वाला, नेत्रों के लिए हितकारी, शीतल रसायन जो गर्मी की ऋतु में विशेष रूप से सेवनीय है।
3. यह विद्यार्थियों व बुद्धिजीवियों के लिए एक उत्तम टॉनिक है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 चम्मच अर्थात् 10 से 20 ग्राम सुबह-शाम दूध के साथ या रोटी आदि के साथ चटनी की तरह भी प्रयोग कर सकते हैं।

पतंजलि दृष्टि (आई ड्रॉप)

नियमित रूप से 2-2 बूँद औषध को आँखों में डालने से मोतियाबिन्द कट जाता है। ग्लूकोमा के रोगी का आँख का दबाव कम हो जाने से धीरे-धीरे ठीक हो जाता है। कम उम्र में आँखों पर दूर या नजदीक का चश्मा, आँखों की एलर्जी, काला या सफेद मोतियाबिन्द (ग्लूकोमा व कैटरैक्ट), डबल विजन, कलर विजन, रेटिनाइटिस पिग्मेंटोसा, रतौंधी व यूवीआइटिस (Uveitis) आदि समस्त नेत्र रोगों से बचने व इन समस्त नेत्र रोगों से छुटकारा पाने के लिए यह एक उत्तम अनुभूत औषध है।

सेवन-विधि व मात्रा :

1 से 2 बूँद सुबह-शाम आँख में डालें। बच्चों को गुलाब जल में मिलाकर डाल सकते हैं। 5 मिली गुलाब जल में 5 बूँद दृष्टि आई ड्रॉप डालकर रख लें और इसे बच्चों एवं कोमल प्रकृति के व्यक्ति प्रयोग कर सकते हैं।

दिव्य धारा

मुख्य घटक :

पिपरमेन्ट, कर्पूर, अजवायन सत्, लौंग तैल आदि।

गुण-धर्म व सेवन-विधि :

1. 5 से 10 बूँद दिव्य धारा को सौंफ आदि के अर्क में मिलाकर 15-15 मिनट में देने से हैजे में लाभ होता है। जब रोग में लाभ होने लगे तो समय भी उसी तरह बढ़ा दें अर्थात् आधे-आधे घण्टे, एक-एक घण्टे, दो-दो घण्टे पश्चात् देने लगें। इससे हैजे में निश्चित लाभ हो जाता है।
2. यह सिर दर्द, दाँत दर्द, कान का रोग, नकसीर, शीतपित्त, खाँसी, अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि में लाभदायक है।
3. सिर दर्द में माथे पर इसकी 3-4 बूँद लगाकर मालिश करने तथा सूँघने से सिर दर्द में तुरन्त राहत मिल जाती है। दाँत दर्द होने पर रूई में लगाकर पीड़ायुक्त स्थान पर लगा दें।
4. उदरशूल, आध्मान आदि उदर-विकारों में खाँड, बताशा या गुनगुने जल में 3-4 बूँद डालकर सेवन करें। दमा व श्वास में रूमाल पर दिव्यधारा लगाकर सूंघने व छाती पर लगाने से विशेष लाभ होता है। श्वास रोग बढ़ने की वजह से यदि श्वास न ले पा रहे हों तो आधे से एक लीटर गुनगुने जल में 4-5 बूँद दिव्य धारा डालकर वाष्प लेने से तुरन्त लाभ मिलेगा।

दिव्य दन्तमंजन

मुख्य घटक :

बबूल, नीम, मौलसरी, तुम्बरू, माजूफल, छोटी पीपल, अकरकरा मूल, लवंग, कालानमक, समुद्रफेन, सैंधानमक, स्फटिकभस्म, कर्पूर देशी, पिपरमेन्ट आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. इसके प्रयोग से मुख दौर्गन्ध्य, अरुचि आदि विकारों का शमन होता है जिसके

फलस्वरूप मसूड़ों से निकलने वाला रक्त-पूय (पायरिया) दूर होता है तथा दाँतों में फँसे अन्न कण निकल जाते हैं।

2. इसके प्रयोग से दांतों तथा मसूढ़ों के विकारों का शमन होता है।

सेवन-विधि :

इस मंजन को मध्य की अंगुली से मसूड़ों तथा दाँतों पर अच्छी तरह मालिश करें या टूथ ब्रश से भी इस मंजन को कर सकते हैं। इसके पश्चात् पानी से अच्छी तरह सफाई करें। रात को भी खाने के बाद मंजन को प्रात: काल की तरह ही प्रयोग करें। इस प्रकार दिव्य दन्तमंजन के प्रयोग से दाँतो के सभी रोग दूर होते हैं।

दिव्य पेय (हर्बल टी)

मुख्य घटक :

एला (इलायची), तेजपत्र, दालचीनी, लवंग, चन्दन, जावित्री, जायफल, काली मिर्च, गुलाबफूल, कमलफूल, अश्वगन्धा, सोमलता, पुनर्नवा, वासा, चित्रक, अमृता, भूमि आँवला, आज्ञाघास, बनप्साफूल, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, तुलसी, छोटी पिप्पली, श्वेत चन्दन, चव्य, सोंठ, नागरमोथा, तेजपात, सौंफ, अर्जुन आदि।

मुख्य गुण-धर्म :

1. यह मादकतारहित मधुर स्वाद्युक्त चाय का उत्तम विकल्प आयुर्वेदिक पेय है।
2. इस पेय के सेवन से शरीर में रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है, जिससे कफ आदि रोग शरीर को आक्रान्त नहीं कर पाते। किसी असावधानीवश रोग शरीर में आ भी गया हो तो शीघ्र छुटकारा मिल जाता है।
3. इसके सेवन से मन्दाग्नि दूर होती है। मस्तिष्क को शान्ति व शक्ति प्राप्त होती है तथा शरीर की शक्ति में भी वृद्धि होती है। इस पेय का सेवन कॉलेस्ट्रॉल का नियमन करता है तथा हृदय रोगों से बचाता है।
4. यह दिव्य पेय यकृत को शक्ति प्रदान करता है। सबसे उत्तम बात तो यह है कि यह दूध में उपस्थित स्नेहत्व को नष्ट नहीं करती तथा निकोटिन रहित है, जबकि बाजार में उपलब्ध चाय में निकोटिन होती है तथा उसके सेवन से गैस, कब्ज व एसीडिटी जैसे रोग सहज ही पैदा हो जाते हैं।

सेवन-विधि तथा मात्रा :

इस पेय की उपयोग-विधि सामान्य चाय की तरह है। मात्रा भी सामान्य चाय की तरह ही है, बल्कि उससे भी कम मात्रा में डालना उचित है। इसे दूध में डालकर सामान्य चाय की अपेक्षा अधिक देर तक पकाएँ। इससे जड़ी-बूटियों का अधिक लाभ मिलेगा। आवश्यकतानुसार चीनी मिलाकर पिएं।

सम्पूर्ण शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा व सुन्दरता के लिए पतंजलि आयुर्वेद द्वारा जड़ी-बूटियों से निर्मित श्रेष्ठ व स्वास्थ्यकर उत्पाद*

सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुएं मात्र विलासिता की वस्तु ही नहीं अपितु देह को शुद्ध, निर्मल व स्वच्छ बनाने का सशक्त साधन भी है। आज बाजार में उपलब्ध अनेक सौन्दर्य प्रसाधन विलासिता को बढ़ावा देते हैं, परन्तु अन्ततः देह के लिए अत्यन्त हानिकारक साबित होते हैं; क्योकि उसमें कई तरह के हानिकर रसायनों का सम्मिश्रण होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर दिव्य फार्मेसी/पतंजलि आयुर्वेद ने विशुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से शरीर शोधक (बॉडी क्लींजर), केश शोधक (हेयर क्लींजर), दंत मंजन आदि गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्यकारक उत्पादों कीशृंखला प्रारम्भ की है, जिससे प्राकृतिक वर्ण व सुगन्ध के साथ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की गुणवत्ता-युक्त सौन्दर्य-प्रसाधन देश के लोगों को प्राप्त हो सके।

केशों के प्राकृतिक सौन्दर्य व सुरक्षा के लिए पतंजलि आयुर्वेद द्वारा निर्मित विशिष्ट उत्पाद

हेयर क्लींजर-

1. पतंजलि केशकान्ति हेयर क्लींजर, 2. पतंजलि केशकान्ति मिल्क प्रोटीन हेयर क्लींजर, 3. पतंजलि केशकान्ति रीठा क्लींजर 4. पतंजलि केशकान्ति एण्टी-डैन्ड्रफ हेयर क्लींजर
केशों के रूखेपन तथा रूसी की समस्या को दूर कर केशों की सुन्दरता को बढ़ाता है। इसमें उपस्थित भृंगराज, शिकाकाई तथा आंवला केशों को शक्ति प्रदान करता है, रीठा, नीम, तगर, बाकुची एवं हल्दी जीवाणु संक्रमण को दूर करते हैं। इनके प्रयोग से बालों का झड़ना तथा सफेद होना दूर होकर केशों में कान्ति आती है।

2. **पतंजलि तैजस तैलम्**

तेजस् तैलम् मांसपेशियों की ताकत, त्वचा की सुन्दरता एवं तेज के लिए लाभदायक तथा बालों को सुरक्षा प्रदान करता है। इसमें प्रयुक्त बादाम, जैतून, अखरोट, सूरजमुखी एवं मूंगफली के तैल त्वचा का स्नेहन करते हैं। बादाम, तिल, सरसों एवं एरण्ड के तैल त्वचा की समस्याओं को दूर करते हैं तथा त्वचा पर कान्ति लाते हैं। यह बच्चों, बूढ़ों, स्त्रियों सभी के लिए समान रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

3. **दिव्य केश तैल**

यह बालों के लिए अमृत समान है। यह तेल असमय बालों का झड़ना, रूसी, गंजापन आदि को रोकता है। इसके लगाने से बाल स्वस्थ व घने होते हैं तथा यह बालों को असमय सफेद होने से

* सम्पूर्ण जानकारी के लिए पतंजलि के विभिन्न चिकित्सालयों, उपचिकित्सालयों तथा आरोग्य केन्द्रों में निःशुल्क उपलब्ध स्वदेशी उत्पाद पुस्तिका को देखें।

रोकता है। अनेक दिव्य जड़ीबूटियों के मिश्रण से बना हुआ यह तैल आँखों को शक्ति देता है तथा दिमाग को शीतलता व ताकत देता है। सिरदर्द व सभी प्रकार के शिरोरोग में लाभ प्रदान करता है।

4. **पतंजलि तेजस नारियल तेल**

यह तेल स्वाद, सुगन्ध व प्राकृतिक गुणों से भरपूर शुद्ध तथा सब तरह की मिलावट से पूर्णतया मुक्त है। इसके प्रयोग से बाल स्वस्थ व घने होते हैं तथा बालों के रोगों में लाभ होता है।

हर्बल सौंदर्य उत्पाद- जिसमें है जड़ी-बूटियों का प्रभाव व सुन्दरता का राज

प्रतिदिन स्नान में इनका प्रयोग करने से त्वचा का पोषण होता है, त्वचा की बिमारीयों का शमन व त्वचा की रूक्षता में लाभ होता है।

1. **पतंजलि कान्ति एलोवेरा बॉडी क्लींजर**
2. **पतंजलि कान्ति पंचगव्य**
3. **पतंजलि सौम्या हल्दी चन्दन**
4. **पतंजलि कान्ति नीम**
5. **पतंजलि ओजस मोगरा**
6. **पतंजलि ओजस मुलतानी**
7. **पतंजलि ओजस मिन्ट**
8. **पतंजलि ओजस एक्वाफ्रेश**

स्वादिष्ट एवं शक्तिवर्धक अवलेह व पाक

आयुर्वेदीय चिकित्सा-पद्धति में अवलेह व पाक का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। आज आयुर्वेद को जानने वाला प्रत्येक व्यक्ति 'च्यवनप्राश' से पूर्णतया परिचित है, परन्तु अवलेह व पाक के निर्माण में जिन औषधियों को मात्रानुसार प्रयोग किया जाता है, उनकी उपलब्धता व उचित पहचान न होने से और अत्यधिक महंगी होने के कारण से व्यावसायिक औषधि-निर्माण कर्ता उन द्रव्यों को कम मात्रा में डालते हैं, जिससे उनका व्यावसायिक हित तो होता है, परन्तु रोगी का हित नहीं होता। हमारा प्रयत्न है कि रोगी-हित को सर्वोपरि मानते हुए अप्राप्त द्रव्यों को खोजकर, उनकी पहचान की जाए तथा पूरी मात्रा में उन औषधियों को उस योग में डालकर शास्त्रोक्त विधि से उनका निर्माण किया जाए।

1. **पतंजलि अमृत रसायन (अवलेह)** 2. **पतंजलि च्यवनप्राश** 3. **पतंजलि बादाम पाक**

औषधियुक्त स्वास्थ्यवर्धक शर्बत व पेय

शर्बत आयुर्वेदीय चिकित्सा-पद्धति की सद्यः प्रभावशाली वह परंपरा है, जो सहज रूप से ही पूरे देश में प्रचलित है, परन्तु शर्बत की गुणवत्ता के लिए उसमें पड़ने वाली काष्ठ औषधियों, अर्क या अन्य मिश्रण का विशेष ध्यान रखना होता है। शर्बत स्वाद में मधुर तथा प्रकृति में सौम्य पेय होने के कारण सेवन में सुविधापूर्ण है। ग्रीष्म-ऋतु के उष्ण समय में शारीरिक थकान को दूर कर तुरन्त शक्ति प्रदान करने में श्रेष्ठ हैं।

शर्बत

1. **पतंजलि गुलाब शर्बत**
2. **पतंजलि केशर बादाम शर्बत**
3. **पतंजलि आम शर्बत**
4. **पतंजलि ब्राह्मी शर्बत**
5. **पतंजलि बेल शर्बत**
6. **पतंजलि खस शर्बत**
7. **पतंजलि लेमन स्क्वैश**

ये शर्बत दीपन, पाचन तथा क्षुधावर्धक होते हैं। इनके सेवन से अरुचि, अपचन एवं मूत्र की जलन, अवसाद, तनाव, चिन्ता तथा मानसिक दुर्बलता आदि विकारों का शमन होता है।

पेय

1. **पतंजलि सेव जूस**
2. **पतंजलि मैंगो (आम स्क्वैश)**
3. **पतंजलि संतरा स्कवैश**
4. **पतंजलि स्पेशल ठंडाई**
5. **पतंजलि आंवला अमृत**
6. **पतंजलि आम पना (शर्बत)**

यह पेय स्फूर्ति, ताजगी प्रदान करने वाले तथा समस्त विकारों को दूर करते हैं।

औषधियुक्त कैण्डी एवं मुरब्बा

अतिथि-सत्कार में सात्त्विक खाद्य व पेय प्रस्तुत करने की परम्परा प्राचीन काल से ही हमारे देश में रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए आँवला, गाजर, बेल, सेब आदि फलों से मुरब्बा एवं कैंडी बनाने की प्राचीन विधा को गुणवत्ता के साथ आधुनिक मशीनों द्वारा स्वच्छता पूर्वक निर्मित कर प्रस्तुत किया गया है। जिससे देश के लोगों को स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य भी प्राप्त हो सके।

1. **पतंजलि आँवला कैंडी**
2. **पतंजलि आँवला मुरब्बा**
3. **पतंजलि आँवला चटपटा**
4. **पतंजलि बेल कैण्डी**
5. **पतंजलि गाजर मुरब्बा**
6. **पतंजलि बेल मुरब्बा**
7. **पतंजलि हरड़ मुरब्बा**
8. **पतंजलि सेब मुरब्बा**

इनके सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा समस्त विकारों का शमन होता है।

स्वास्थ्यवर्धक व रुचिकर पाचक औषध समूह

आजकल अधिकांशत: व्यक्तियों में अम्लपित्त, अजीर्ण, बदहजमी, भूख न लगना, खाने के बाद आलस्य आना, खाना ठीक से न पच पाना आदि समस्या आम हो गई है। पाचक औषध समूह के उत्पादों द्वारा इन समस्त समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। दैनिक जीवन में भोजन से पूर्व एवं भोजन के पश्चात् अपनी रुचि के अनुसार उत्पाद चुनकर निरंतर प्रयोग करने से आप सदैव स्फूर्तिमान् बने रह सकते हैं।

1. **पतंजलि पाचक अजवायन एलोवेरा युक्त**
2. **पतंजलि पाचक मेथी नींबू**
3. **पतंजलि पाचक शोधित हरड़**
4. **पतंजलि पाचक अनारदाना गोली**
5. **पतंजलि पाचक छुहारा खट्ठा-मीठा**
6. **पतंजलि पाचक हींग पेड़ा**

7. पतंजलि पाचक हींग गोली
8. पतंजलि जीरा खट्टी-मीठी गोली
9. पतंजलि पाचक अनारदाना चूर्ण
10. पतंजलि पाचक जलजीरा

सात्त्विक खाद्य उत्पाद
(स्वास्थ्यवर्धक आटा, दलिया एवं बेसन आदि)

अत्याधुनिक चक्की मिल्स में अनेक अनाजों एवं दालों से उच्चगुणवत्ता युक्त एवं स्वास्थ्यवर्धक आटा, नवरत्न आटा, ऑर्गेनिक आटा एवं बेसन आदि का निर्माण करके उपभोक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इन आटा चक्की की विशेषता क्रायोजेनिक ग्राइंडिग है- शीतल प्रक्रिया से पीसना, जिसमें अनाज पीसते समय चक्की में उष्णता पैदा नहीं होती, क्योंकि उष्णता पैदा होने से अनाज के बहुत से पौष्टिक तत्त्व समाप्त हो जाते हैं; परन्तु इससे खाद्यान्नों के सूक्ष्म पोषक एवं आवश्यक तत्त्वों के क्षरण की संभावना न के बराबर होगी, साथ ही ऊष्मा के अधिक प्रयोग से होने वाले ऊर्जा के अपव्यय को भी रोका जाता है। इन समस्त पोषक तत्त्वों से भरपूर स्वास्थ्यप्रद खाद्य उत्पादों को आप विश्वास के साथ प्रयोग कर सकते हैं।

1. पतंजलि नवरत्न आटा
2. पतंजलि गेहूँ आटा
3. केसर
4. पतंजलि बेसन
5. पतंजलि दलिया
6. पतंजलि पुष्टाहार दलिया
7. पतंजलि गाय का देशी घी
8. पतंजलि आंवला सुपाच्य अचार

पतंजलि मसाले- स्वास्थ्य के साथ स्वाद भी

प्राचीन काल से आयुर्वेद में मसालों का प्रयोग औषधि के रूप में विविध रोगों के शमन के लिए किया जाता रहा है। वर्तमान में मसालों का प्रयोग औषधीय पक्ष से ज्यादा व्यंजनों के स्वाद एवं सुगन्ध के लिए किया जाने लगा है। पतंजलि मसाले अप्रतिम सुगन्ध तथा स्वाद के साथ, भरपूर औषधीय गुणों से युक्त हैं; क्योंकि दिव्य फार्मेसी एवं पतंजलि आयुर्वेद द्वारा निर्मित आरोग्य मसाले उत्कृष्ट वनस्पतियों और सुगन्धित औषधीय द्रव्यों द्वारा बनाए जाते हैं। जिनके सेवन से आपको स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्यलाभ भी होगा।

1. पतंजलि छोटी सौंफ
2. पतंजलि तेज पत्र
3. पतंजलि काली सरसों
4. काली मिर्च
5. पतंजलि अजवायन
6. पतंजलि दालचीनी
3. पतंजलि लौंग
7. पतंजलि साबुत धनिया
8. पतंजलि जीरा
9. पतंजलि सौंफ
10. पतंजलि मेथी दाना
11. पतंजलि इलायची
12. पतंजलि मुलेठी
13. पतंजलि जावित्री
14. पतंजलि जायफल
15. पतंजलि हींग
16. पतंजलि पिसी काली मिर्च
17. पतंजलि पिसा धनिया
18. पतंजलि सौंठ
19. पतंजलि अमचूर
20. पतंजलि पिसी हल्दी
21. पतंजलि चाट मसाला
22. पतंजलि छोला मसाला
23. पतंजलि दाल मखनी मसाला
24. पतंजलि सब्जी मसाला
25. पतंजलि गर्म मसाला
26. पतंजलि कलोंजी मसाला
27. पतंजलि रायता मसाला
28. पतंजलि राजमा मसाला
29. पतंजलि सांभर मसाला

स्वास्थ्य व स्वाद के साथ औषधीय गुणों से भरपूर अन्य उत्पाद

1. **पतंजलि बिस्कुट**
2. **पतंजलि मैरी बिस्कुट**
3. **पतंजलि नारियल बिस्कुट**
4. **पतंजलि नमकीन बिस्कुट**
5. **पतंजलि मिक्स फ्रूट जैम**
6. **पतंजलि सेब चटनी**
7. **पतंजलि पाईनएप्पल जैम**
8. **पतंजलि शहद**
9. **पतंजलि लीची शहद**
10. **पतंजलि शहद मल्टीफ्लोरा**
11. **पतंजलि मधुरम्**
12. **पतंजलि सरसों का तेल**

त्वचा के प्राकृतिक सौन्दर्य की सुरक्षा ओज, तेज व कान्ति के लिए क्रीम, जैल, लोशन व बाम

विभिन्न जड़ी-बूटियों से निर्मित यह उत्पाद त्वचा के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। इनके प्रयोग से त्वचा पर आई हुई सभी समस्याओं, जैसे कील-मुंहासें, झांईयां, निष्तेजना, कालापन, कान्तिहीनता आदि विकारों में शीघ्र लाभ होता है तथा रोगग्रस्त त्वचा पुनः स्वस्थ हो जाती है। इनके प्रयोग से चेहरे का प्राकृतिक सौन्दर्य फिर से निखरता है तथा मुख पर ओज, तेज, कान्ति, आभा तथा लावण्य आ जाता है।

1. **तेजस एन्टी रिंकल क्रीम**
2. **एलोवेरा जैल**
3. **तेजस बॉडी लोशन**
4. **सौन्दर्य फेश वॉश**
5. **तेजस ब्यूटी क्रीम**
6. **पतंजलि पेन रिलीवर**
7. **पतंजलि बॉम**
8. **पतंजलि क्रेक हील क्रीम**

दंत सुरक्षा के लिए पतंजलि आयुर्वेद के विशिष्ट उत्पाद

विभिन्न औषध द्रव्यों से निर्मित दंतमंजन तथा पतंजलि दन्तकान्ति डेण्टल क्रीम दांतों की सम्पूर्ण सुरक्षा के लिए लाभकारी है। इसमें पड़ने वाली अकरकरा एवं बबूल मसूड़ों को शक्ति प्रदान करता है। नीम, तिबरू, हल्दी और लौंग कीटाणुओं से सुरक्षा प्रदान करता है। पुदीना और पिप्पली ताजगी प्रदान करता है। पीलू और माजूफल दाँतों की जड़ों को शक्ति-प्रदान करता है। इस प्रकार दन्तकान्ति का नित्यप्रति प्रयोग पायरिया, जिंजीवाइटिस, दन्तशूल, मुंह की दुर्गन्ध, मसूड़ों की सूजन आदि दन्त सम्बन्धी को दूर करता है।

1. **पतंजलि दन्तकान्ति डेन्टल क्रीम**
2. **दिव्य दन्त मंजन**